ALL NATIONS GOSPEL PUBLISHERS

Copyright ANGP

www.angp-hb.co.za

info@angp.co.za

THE HEART OF MAN

OR

THE SPIRITUAL HEART MIRROR

(An Allegorical Representation in Ten Pictures)

This booklet originated in France in 1732, was revised and re-written for the mission fields of Africa by Rev. J.R. Gschwend in 1929, and has subsequently been translated and printed under copyright in over 250 indigenous languages by All Nations Gospel Publishers who are distributing it today in 127 mission countries. People of all languages, classes and religions are being led by this booklet to experience the deep spiritual truth and significance of God's message to mankind as expressed by the prophet Ezekiel 586 years before Christ, "I will give you a new heart and a new mind .... then you will be my people, and I will be your God!" Ezekiel 36:26-28.

COPYRIGHT

ISBN 1 - 919852 - 44 - 1

ALL NATIONS GOSPEL PUBLISHERS
P.O. Box 2191, PRETORIA, 0001, R.S.A.
(A Gospel Literature Mission financed by donations)
(Reg. No. 1961/001798/08)

मन दर्पण

अर्थात

मनुष्य का मन

ईश्वर का मन्दिर

अथवा

शैतान का निवास स्थान।

Copyright ANGP

तेरहवीं छपाई

भूमिका।

इस पुस्तक को बहुत प्राचीन समय में किसी फ्रांसीसी खृस्तान ने अपनी भाषा में बनाथा। पीछे वह १७३२ ई० में जर्मन भाषा में उल्था किया गया और आत्मिक शील दर्पण नाम से प्रसिद्ध हुआ जिससे हरएक मुक्ति का खोजी अपने मन की दशा को पहिचान कर अपने चालचलन और चरित्र को सुधार सकता है। सन १८१२ ई० में श्रीयुक्त पादरी गोस्सनर साहब ने उसको सुधारा और रोमन मत के मूल उपदेश उससे निकालके फिर छपवाया।

श्रीयुक्त पादरी स्टेर्नबर्ग साहब ने १८६४ ई: में जर्मन भाषा से हिन्दी भाषा में उल्था करके उसका नाम मनदर्पण रखा।

मनुष्यों का मन इन दोनोंमें से एक होगा अर्थात ईश्वर का मन्दिर अथवा शैतान का कारखाना क्योंकि खृष्ट और उसके प्रेरित यत्न से सिखाते हैं कि जैसा परमेश्वर विश्वासियों और धार्म्मियों में राज्य करता है और उनके मन को अपना मन्दिर ठहराके अपने आत्मा से जिलाता पवित्र करता और परम सुख देता और स्वर्गीय कुशल और बल और अनन्त जीवन से उसको भरपूर करता है उसी रीति से शैतान अपना राज्य सब दुष्ट लोगों अविश्वासियों और ईश्वरहीनों में स्थापित करता है। वह आप दुष्टात्मा होके अविश्वासियों और अधर्म्मियों में दुष्टता उत्पन्न करता और उन्हें अति दुःखी और अभागे बनाता और अन्त को नरक में खींचता है।

———

खृष्ट कहता है कि जिस बैरी ने जंगली बीज गेहूं के बीच में जब लोग सोये थे बोया सो शैतान है। (मत्ती १३, ३९)। फिर खृष्ट दुष्टों और अबिश्वासियों से कहता था कि तुम अपने पिता शैतान से हो और तुम अपने पिता के अभिलाषों पर चला चाहते हो वह आरम्भ से मनुष्यघाती था और सच्चाई में स्थिर नहीं रहता क्योंकि सच्चाई उस में नहीं है। जब वह झूठ बोलता तब अपने स्वभावही से बोलता है क्योंकि वह झूठा और झूठ का पिता है। योहन ८, ४४।

पौलुस प्रेरित कहता है कि शैतान एक प्रधान और अधिकारी और बलवन्त दुष्टात्मा है जो अपनी सेना अर्थात सब दुष्टात्माओं के साथ संसार के अन्धकार के और आकाश के सूने स्थानों में बास करता है और बिश्वासियों और धर्म्मियों से लड़ता है। (ईफिसी ६, १२)। फिर वह कहता है कि शैतान इस संसार का ईश्वर है अर्थात दुष्टों और अबिश्वासियों का। वह उनकी बुद्धि अन्धी करता है कि खृष्ट जो ईश्वर की प्रतिमा है उसके तेज के सुसमाचार की ज्योति उन पर प्रकाश न होय। (२ कोरिन्थ ४, ४)। इससे प्रगट है कि खृष्टके मंगल समाचार पर बिश्वास न करना शैतानी अन्धापन है।

फिर पौलुस कहता है कि शैतान आज्ञालंघन करनेहारों में कार्य्य करवाता है। ऐसे लोग अर्थात वे जो इस संसार की रीति के अनुसार हां आकाश के अधिकारके अर्थात उस आत्मा के अध्यक्ष के अनुसार चलते हैं पाप में मृतक हैं। (एफेसी २, १-२)।

पतरस प्रेरित कहता है कि शैतान धर्म्मियों और विश्वासियों का विरोधी और बैरी और परीक्षक है जो कभी उन्हें चैन नहीं देता पर मरजते हुए सिंह की नाईं ढूंढ़ता फिरता है कि किस को निगल जाय। इसलिए हमको सचेत रहना और जागते रहना और विश्वास में दृढ़ होके उसका सामना करना चाहिए। (१ पतरस ५, ८-९)।

योहन प्रेरित कहता है कि शैतान सारे संसार का भरमानेहारा है। वह पाप का जनक और आरम्भ करनेहारा, वह पाप और उसके द्वारा से मृत्यु की इस संसार में लाया है, (प्रकाशित १२.९) इसलिए जो पाप करता है सो शैतान से है परन्तु ईश्वर का पुत्र यीशु खृष्ट इसलिए प्रगट हुआ कि शैतान के कामों को लोप करे। (१ योहन ३, ८)।

याकूब प्रेरित कहता है शैतान का सामना करो तो वह तुम से भागेगा। ईश्वर के निकट आओ तो वह तुम्हारे निकट आवेगा। याकूब ४, ७-८।

प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को सामर्थ दिया कि भूतों को निकालें हां उसने उन्हें शत्रु के सारे पराक्रम पर सामर्थ्य दिया है। (मत्ती १०, ८। लूक १०-१९)।

पौलुस प्रेरित एफेसी ६, १०-१८ में उन ईश्वरीय हथियारों को दिखाता है जिनसे हम शैतान का सामना कर सकते और जयवन्त हो उनके अग्निबाणों को बुझा सकते हैं।

धर्म्मपुस्तक की ये खृष्टीय सच्चाइयां इस पुस्तक के चित्रों में आगे रची जाती और बर्णन की जाती हैं कि अधर्म्मियों को पाप के बन्धन से छुड़ाने और धर्म्मियों को विश्वास और धर्म्म में दृढ़ करें। हरएक चित्र में मनुष्यके हृदय और मुख की प्रतिमा

दी जाती है इसलिए कि हृदय सारी भलाई और बुराई का सोता है उसकी दशा से मनुष्य का बिचार किया जाता है, मुंह तो यह चिन्हसा है जिसको अन्तर मनुष्य बाहर टांग देता है और जिससे कुछ कुछ पहिचाना जाता है कि कैसे आत्मा का है।

इसलिए हे पढ़नेवाले हरएक चित्र देख करके अपने पर दृष्टि कर और अपने मन को जांच कि तू अपनी दशा पहिचाने, क्या मसीह अथवा शैतान तुझमें राज्य करता है, क्या ईश्वर का अथवा शैतान का सिंहासन तुझमें है, क्या तू पाप का और शैतान का बास अथवा ईश्वर का निर्बन्ध किया हुआ सन्तान उस मनुष्य के समान मत हो जो अपना स्वाभाविक मुंह दर्पण में देखता है और अपने को ज्योंहो देखता त्यों चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था। तू परमेश्वर के आगे खड़ा है जो अन्तःकरण और मन को जाँचता है हां सब कुछ जो तुझमें है देखता और जानता है, यदि तू अपने अन्तर में बुराई पाता है तो पछुता पर निराश मत हो। खृष्ट की ओर फिर, वह तेरा भी मुक्तिदाता है, तेरे लिए भी जगत में आया है हां तेरे लिए भी शैतान के कामों को लोप किया है कि तुझे शैतान के बश से छुड़ाके अपने ही राज्य में लावे। (कोलोसी १, १३)। वह तुझे भी बल दे सकता है कि तू आगे को शैतान के अधीन और पाप का दास न रहेगा, वह तुझे निर्बन्ध कर सकता और यदि ईश्वर का पुत्र तेरा उद्धार करे तो निश्चय तेरा उद्धार होगा। योहन ८, ३६।

Copyright ANCP

मन दर्पण ।

पहिला चित्र ।

सांसारिक मनुष्य के मन का रूप जो पाप में रहता है और संसार के व्यवहार पर चलता है और शैतान को अपने मन में राज्य करने देता है ।

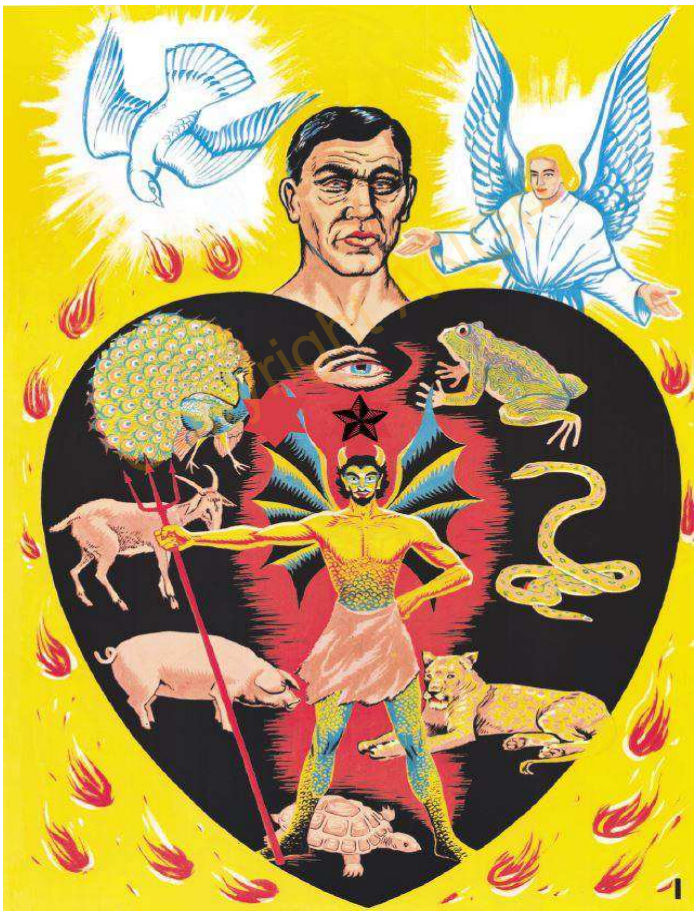

देखो यह सांसारिक मनुष्य के मन की दशा हैं जो पाप के बश में है और संसार के व्यवहार पर चलता और दुष्ट आत्मा की आज्ञा में रहता है (इफेसी २, २) उसके मुंह पर ढिठाई छा रही हैं क्योंकि वह पाप को कुछ नहीं जानता है परन्तु जो कुछ मन में आता है सोही करता है वह भोग बिलास में रहता है और ईश्वर और परलोक और महाबिचार की चिन्ता नहीं करता है। उसके हृदय में शैतान अपने सात साथियों समेत बिराजता है जो सात महा पापों की प्रतिमा हैं।

(१) पहला मोर है जो अपनी पूंछ की छबि पर गर्व रखता है सो अंहकार की प्रतिमा है। ऐसे अंहकार से बहुत लोग अपने धन अथवा रूप अथवा कुल अथवा धर्म्म अथवा ज्ञान में फूलते हैं और दूसरों को तुच्छ मानते हैं और यह विचार नहीं करते हैं कि जो कुछ अच्छी बस्तु हममें है सो हमारी कमाई नहीं है परन्तु केवल परमेश्वर का दान है।

(२) दूसरा पशु बकरा है सो कामातुरता और सकल अशुद्धता की प्रतिमा है।

(३) तीसरा सूअर सब खाउओं मद्यप मतवालों और पेटुओं की प्रतिमा है।

(४) चौथा बेंग जो मट्टी खाता है सो लोभ का रूप है जिससे लोग पृथिवी के धन के भूखे रहते हैं।

(५) पांचवां सांप है जिसने हमारे पहिले माता पिता का सुख देखके उनको बहकाके भ्रष्ट किया सो डाह का स्वरूप है जिससे लोग एक दूसरे की भलाई नहीं देख सकते हैं परन्तु उनके दुःख से सुखी होते हैं।

(६) छटवां बाघ क्रोध का रूप है। क्रोध से लोग निर्दय होके एक दूसरे को सताते और नाश करने की युक्ति करते हैं।

(७) सातवां कछुवा आलस्य का रूप है जिससे लोग हरएक भले काम में आलसी और ढीले होते हैं।

ऐसे मन में से पवित्रात्मा तो निकल गया है, तिस पर भी उसने पापी को अपने दान और अनुग्रह देने से हाथ नहीं उठाया है वह आग की ज्वालाओं के समान मन को घेरे रहता है परन्तु मन में प्रवेश करने का दांव नहीं पाता है क्योंकि वह पापों की मलीनता से भरा और शैतान के बश में है।

पवित्र दूत अथवा ख्रीष्ट की कृपा भी परमेश्वर के बचन के द्वारा और दूसरे उपायों से पापी को जगाने का परिश्रम करता है परन्तु पापी सुनता और समझता नहीं क्योंकि वह पाप के नशे में होके आंख कान मूंदे हुए रहता है।

यही उस पापी की डरावनी दुर्दशा है जो संसार के ब्यवहार पर रहता है। हाय कितने लोग इस दुर्गति में ऐसे निश्चिन्त रहते हैं कि मानो उनको कुछ डर नहीं है।

वे क्रिस्तान कहलाते हैं परन्तु पाप के दास और शैतान के गुलाम हैं, वे जीवते कहलाते हैं पर मृतक हैं। प्रकाशित ३, १।

प्रार्थना ।

हे अति दयालू परमेश्वर और जगतारक अपनी अथाह दयाकी आंखों से मेरे अभागी पापमय मन की दुर्गति पर दृष्टि कर अपनी स्वर्गीय ज्योति की किरणोंसे मेरे अन्धियारे मनमें उंजियाला दे कि मैं अपनी मन की दशाको अच्छी रीतिसे पहिचानू और कृपा करके सहायता कर कि मैं ऐसी दुर्गति के बंधनों से छूटूं। हे सर्वशक्तिमान त्राणदाता मुझे बचा रख कि मैं मन की बुरी लालसा में फिर न पड़ और अपना मन नरकबासी शत्रु को बिनाश के लिये न सौंपूं। जो बचन तूने कहा है कि जो पाप करता है सो पाप का दास है हां शैतान का है और शैतान का बालक है, इस बचन से मुझे डरा क्योंकि जितने पापों में मैं रहता हूं उतने अशुद्ध भूत मुझमें रहते हैं और मेरे मन को अशुद्ध करते हैं। हे सकल सृष्टि के कर्त्ता और प्रभु तूने मेरे मन को अपने लिये सिरजा और अपने निवास के लिये ठहराया है सो मैं उसको शैतान के स्थान के लिये कैसे सौंपूं। हे सर्बसामर्थी मुझे शैतान के छल बल और उपद्रव से छुड़ा, पाप के सब मलीनता से मुझे शुद्ध कर, मेरा पापमय अशुद्ध मन मेरे भीतर में से निकाल और मुझ में एक नया

और शुद्ध मन सिरज और मुझ में अपने लिये एक मन-भावन घर बना जिसमें हे यीशु तेरे पवित्र नाम की स्तुति और महिमा होवे। आमीन ॥

भजन।

हे ईश्वर मेम्ना यीशु तारक मेरा
बड़ा मम पार तोर कृपा और घनेरा
मैं धूल और राख में बैठकर शोक करूंगा
कृपा कर कि मैं पापों से उठूँगा
तू पाप की लालसा सभी मुझमें नाश
प्रेम दृष्टि से खींच मन चित अपने पास
तू मुझे थाम न तो नित पछाड़ खाऊं
दे कि मैं सब में तुझी को रिझाऊं
मन में तू ही अकेला राज चला
कि उसमें पाप सदा फिर घुसे ना ॥

———

Copyright ANCP

दूसरा चित्र।

इस पापी के मन की दशा जो पाप से पछताता है और पाप को त्यागने लगता है।

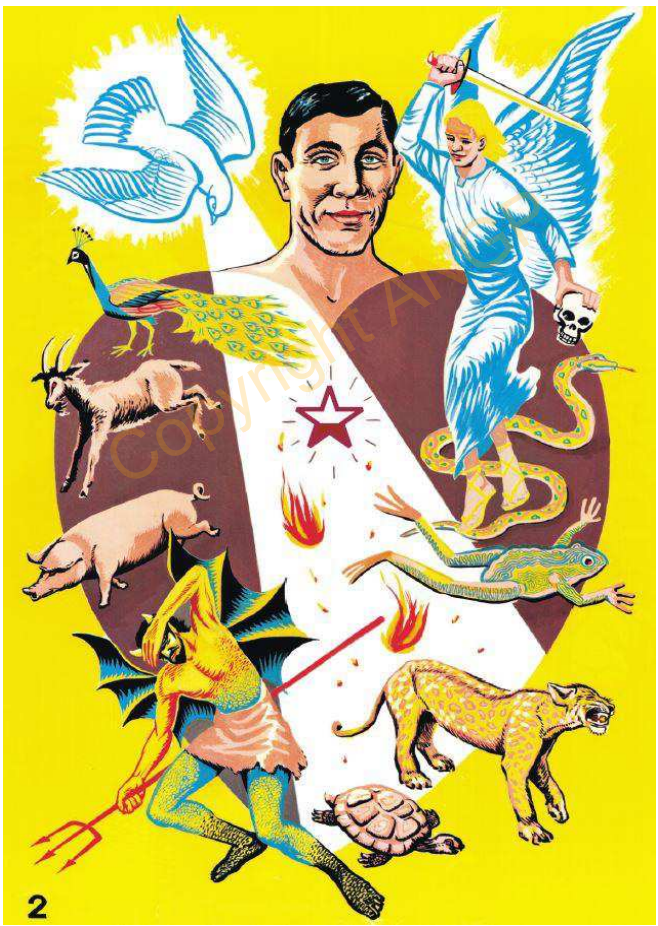

इस चित्र में जो दूत तलवार और खोपड़ी हाथमें लिये हैं सो ईश्वर और ख्रीष्ट की भेंट करनेवाली कृपा की प्रतिमा है जिससे पापी को दिखाया जाता है कि पाप का फल क्या है अर्थात न्याय और मृत्यु। वह उसको ईश्वर के बचन से जानता है कि न व्यभिचारी न मूर्त्तिपूजक न परस्त्रीगामी न शुहदे न पुरुषगामी न चोर न लोभी न मद्यप न निन्दक न उपद्रवी लोग ईश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे। १ कोरिन्थ ६, ९-१०। ऐसी बातों को सुन के पापी अपने मन में घबराता है और अपने मन में केवल पाप और मलीनता देखता है। जो ज्योति अब ऊपर से उसके मन में पड़ती है तिस से पाप का घिनौना स्वरूप और बुराई उसको मालूम होता है, वह पाप से पछताता है उससे बैर और घिन करता है वह उससे छुटने चाहता है परन्तु देखता है कि पाप बलवान है और मैं निर्बल हूं और मेरा मन पाप की ओर झुका है इस कारण वह अपने अन्तःकरण का थाह से यह पुकारता है कि "अभागा मनुष्य जो मैं हूँ मुझे इस मृत्यु की देह से कौन बचावेगा"। जिस पर पौलुस प्रेरित यह उत्तर देता है मैं ईश्वर का धन्य मानता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से वही बचानेहारा है अर्थात पवित्रात्मा जो पछतानेहारे और चूर्ण मन के निकट आता और ईश्वरीय प्रेम की किरण उस में डालता

और उसको उंजियाला और बल दिलाता है । और ज्यों ज्यों पवित्रात्मा की ज्योति मन में समाती और कृपा की चिनगारियां उस में फैल जाती हैं त्यों त्यों शैतान को अपने संगियों समेत उस में से भागना पड़ता है । ये अति दुष्ट मुर्त्ति और घिनौना पशु और कुकर्म्म की प्रतिमा सब भाग जाते हैं क्योंकि जहां ज्योति मन में समाती है तहां अन्धकार नहीं रह सकता है । जिस घड़ी दिन होता है रात जाती रहती है ईश्वर की कृपा वही ज्योति है और पाप वही अन्धियारा और रात है ज्योंही हम पाप से बैर करने लगते हैं त्योंही शैतान को हटना पड़ता है । वह केवल पाप अर्थात अन्धियारे में राज्य कर सकता है, और केवल पाप के द्वारा से मन में समा सकता है । पाप की प्रीति उसको मन की कुँजी देती है बुराई से मिला रहना उसके लिये मन का फाटक और द्वार खोल देता है । ईश्वर का और भलाई का प्रेम और पाप का बैर उसको मन के भीतर आने नहीं देता पर उसको भगाता है ।

हे प्यारो, ज्योति से प्रेम और बुराई से बैर रखो और बुराई का सामना करो तब शैतान तुम से भागेगा । संसार और पाप और सब बुरी लालसाओं की ओर से अपनी आंखें मूंद लो और अपना मन पवित्र आत्मा की ज्योति के लिये खोल दो । इस स्वर्गीय उंजियाले की हरएक किरण तुम को प्रिय हो क्योंकि वह पाप और अन्धियारे,

शैतान और नरक को तुम्हारे मन में से दूर कर देता है। तुम यत्न से अपने मन को जांचो जिससे पाप की हरएक अशुद्धता को जो उस में छिपी रहती है पाओगे और उससे घिन कर सकोगे। ईश्वर की ज्योति जो सदा तुम्हारे मन के निकट ठहरती और प्रवेश करने चाहती है और ज्योंही तुम उसके लिये खोलते त्योंही भीतर पैठती और सब कुछ तुम में प्रकाश करती और जिलाती है, इसी ईश्वर की ज्योति में तुम हरएक बुरा पशु और पाप की हर एक धूल और छाया को देखोगे और उसकी सारी कुरूपता को पहिचानोगे और परमेश्वर की कृपा जो निर्बलों में बली होती है तुमको उससे छुड़ावेगी।

प्रार्थना ।

हे परमेश्वर सकल ज्योति और सकल जीवन के मूल, केवल तू और तेरे आत्मा की ज्योति मुझे पाप की बुराई और दुष्टता दिखा सकती है सो जीवन की ज्योति मेरे पाप के अन्धियारे में चमकने दे कि मैं देखूँ और जीऊं। तू पापी की मृत्यु नहीं चाहता है परन्तु तने अपने जीवन की किरिया खाके यह कहा है कि "मैं चाहता हूं कि पापी फिरे और जीवे' सो जो पाप मुझे अन्धा करता, घात करता और शैतान की गुलामी में बांध रखता है सो ही मुझे दिखला और वह कृपा जिसको तूने सब पापियों को यीशु मसीह में देने को

कहा है मुझे भी दी जावे । वही मेरे मन में पैठके उसको पश्चात्ताप के तौर से घायल करे जिस्तें पाप मृत्यु और शैतान मेरे पास से हटे और तेरे लिये जगह तैयार होवे । अपना पवित्र आत्मा मुझे दे कि वह ईश्वर का प्रेम और तेरी आज्ञाओं की प्रीति और आनन्द मुझ में उपजावे जिससे मैं फिर पाप को अपने अंगों में राज करने और शैतान को मुझे अन्धा करने, बहकाने और बस में करने न देऊं । मुझे अच्छी तरह से समझा कि पाप में कल्याण नहीं है परन्तु जो पाप करता है सो पाप का दास और नरक और अन्धकार का सन्तान है । उस बात को मुझे कभी भूलने न दे जो तेरे बचन में लिखी है कि "दुष्ट तेरे साथ न रहेगा, कोई अधर्म्मी तेरे राज्य में प्रवेश न कर सकेगा" और कि सभों को जो बुराई करते हैं सदा की मृत्यु, कड़ा बिचार और नरक के दण्ड की राह ताकना है । ऐसा कर कि मैं हरएक पाप से पूरा पश्चात्ताप करूं, उसको सचाई सहित मान लेऊं और अपना मन उसकी ओर से फिराऊं और तेरी ओर लौट आऊं जिस्तें मैं सारी बुराई से शुद्ध हो जाऊं, अन्धियारे के बन्धन से छुट जाऊं और तेरी कृपा, तेरी ज्योति और तेरी संगति के योग्य होऊं और तुझे सन्तुष्ट करूं आमीन ॥

भजन ।

अपने पाप मैं पहिचानता,
तेरे आगे झुकता हूँ ।
मुझ पर कृपा कर हे प्रभु
मेरी ओर कान धर और सुन।
मेरे पाप को क्षमा कर ।
सदय मुझे ग्रहण कर ।
पाप के मार्ग पर से हटा दे
कृपा पथ पर पांव चला दे ॥

Copyright ANGP

—o—

तीसरा चित्र ।

उस पापी की दशा जो खृष्ट पर और मंगल समाचार पर विश्वास करके पवित्र आत्मा से भर जाता है ।

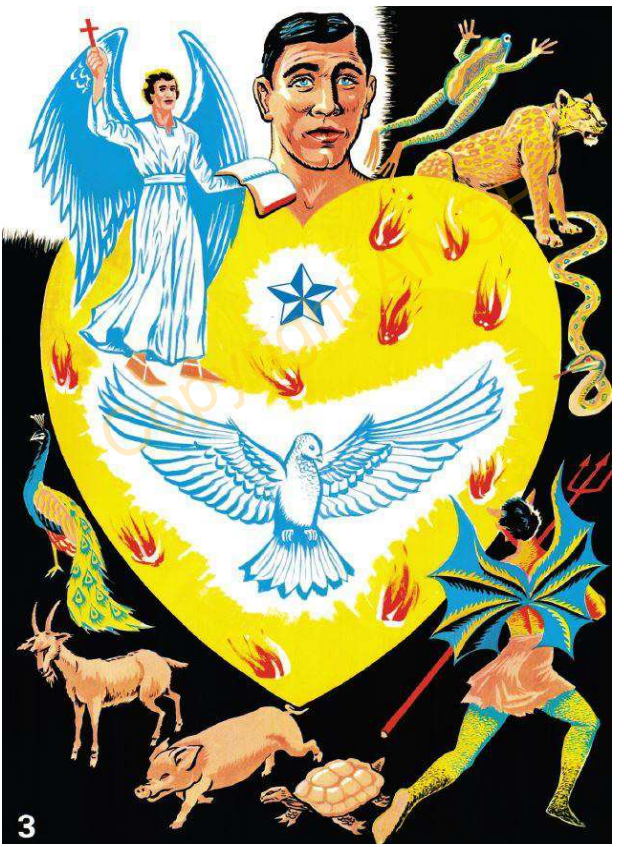

पापी अपने पापों को और ईश्वर की दया और धीरज को देख के जिसने उसको यहांलों सम्भाला और पश्चात्ताप के लिये बुलाया, दुःखित, खेदित और शोकित होता है और सारे मन से आंसू बहाता है और अपने प्राण के भीतर पीड़ित होता है कि मैं ने उस ईश्वर को जो प्रेममय और धीरजमय है ऐसी भयकर रीति से और अनेक बेर दुःखित किया, बिसार दिया, न समझा और तुच्छ किया है और उसके बिरुद्ध इतने दिनों से शैतान की सेवा कर रहा हूँ।

जब उसका मन ईश्वर के अनुग्रह से सिद्ध किया गया तब धर्म्मपुस्तक की ये बातें पूरी होती हैं कि "यहोवा खेदित लोगों के समीप रहता है और अत्यन्त दुःखियों का उद्धार करता है"। गीत ३४, १८। और "वही है जो खेदित लोगों का खेद दूर करता और उनके शोकरूपी घावों पर शान्तिरूपी पट्टी बांधता है"। गीत १४३, ३। दूत अर्थात ईश्वर की कृपा उस के मन के आगे खड़ा होके यीशु ख्रीष्ट जो क्रूश पर मारा गया है, और मंगल समाचार को उसके आगे रखता है अर्थात उसको यह मंगल और मुक्तिदायक समाचार सुनाया जाता है कि तुम्हारे ऐसे पापियों को बचाने के लिये ख्रीष्ट जगत में आया, वह पापियों के लिये मरा और उसने पापमोचण और अनन्त जीवन कमाया है, सो चूर्ण और टूटे और झुके और

लज्जित मन को ईश्वर की ओर से खीष्ट में कृपा, पाप-मोचण, मुक्ति और जीवन और परमगति दी जाती है! जब पापी इस दान को दीनहीन होके बिश्वास से और भरोसा के साथ ग्रहण करता है, और यदि वह यीशु खीष्ट को जो क्रूश पर मारा गया, उसके जीवन और मरण को और उसकी कमाई को अपना कर लेता अर्थात यदि वह सचमुच यह प्रतीति करता है कि यह सब मेरे लिये हुआ और मुझे सेंत में कृपा से दान किया जाता है तब वह पवित्र आत्मा को प्राप्त करता है जैसा सब बिश्वासी खृस्तान प्राप्त करते हैं, और पवित्र आत्मा उसके आत्मा को साक्षी देता है कि अब तेरे पाप क्षमा किये गये और तू ईश्वर का सन्तान हो गया क्योंकि पवित्र आत्मा मन को कुशल, आनन्द और धर्म्म से भर देता है, और इसी रीति से ईश्वर का राज्य सचमुच उस में उतरा है। अब भी तो आंसू बहते हैं सो ठीक है, पर केवल धन्यबाद और आनन्द और परित्याग के आंसू बहते हैं उसके लिये जिसने उसको सब पापों से छुड़ाया और अपने आत्मा से परिपूर्ण किया है। तन और मन जीवत ईश्वर के लिये आनन्द का शब्द करते हैं, तारा मन में झलकता है क्योंकि बिश्वास जीवत हुआ। उसकी मुक्ति के वैरी, वे घिनित पश अर्थात शैतान और उसके संगी अब उसके मन में से निकल गये और अब

कहा जाता है, "तुम ऐसे थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु के नाम से और हमारे ईश्वर के आत्मा से धर्म्मी ठहराये गये"। १ कोरिन्थ ६, ११।

जिस पापी को ऐसा अनुग्रह मिला उसी की गति और भाग और महिमा कौन वर्णन कर सकता है ? वह भजन पर भजन गाने चाहता है, वह अपने निस्तारक और उसकी कृपा में आनन्द करने में अन्त नहीं पाता, उसके प्रेम और दया की प्रशंसा और धन्यबाद करने में नहीं थकता है।

इसपर भी उसको यथा योग्य डर रखना और जागता रहना और निश्चिन्त न होना चाहिये क्योंकि वे पशु अर्थात पाप मन में से निकल तो गये शैतानका दावा और पराक्रम उस पर से जाता तो रहा पर वह बहुत दूर नहीं गया। पाप दिन रात घात में रहता है कि जहां से वह भगाया गया है तहां फिर पैठे। शैतान ने जितना अधिक खोया है उतनाही अधिक क्रोधित हो गया है, इसलिये "जागते रहो और प्रार्थना करो"।

प्रार्थना

हे ईश्वरीय त्राणकर्त्ता, मैं तेरे अनुग्रह और प्रेम से कहां तक आनन्द करुं और तेरे विभवमय मुक्तिदायक मंगल-समाचार के लिये कहां लों धन्यबाद करूं। तूने मुझे अपने लोहू से मुक्ति अर्थात मेरे सब पापों की क्षमा

दिई (एफेसी १, ७)। तूने मुझ पर मोक्ष के दिन के लिये छाप दिई है और मेरे मन में पवित्र आत्मा का बयाना दिया है (२ कोरिन्थ ६, २२)। हे प्रभु मेरे विश्वास को जीवत कर, मेरे मन को आंखों को उजियालामय कर; कि मैं उस सम्पत्तिको, उन पदार्थों को और ईश्वरीय आशीष को जानूँ जिसको तूने अपने कष्ट और मरण से मेरे लिये प्राप्त किया और अपने मगलसमाचार में हम लोगों के आगे धर दिया। वाह, तूने मुझे क्याही अनुग्रहीत, हर्षित और शांति पूर्ण बनाया! मैं जो पहले शैतान का निवास स्थान था अब पवित्र आत्मा का मन्दिर हुआ, जो पहले पाप का गुलाम था अब ईश्वर का सन्तान हुआ, जो पहले अशुद्ध भूतों का मांद था जिससे अब पवित्र दूत आनन्द करते हैं। मुझको जिसमें पहले पाप और शैतान राज्य करते थे अब पवित्र आत्मा, जो मुझ में रहता है, आनन्द और मिलाप और धर्म्म और विश्राम देता है, मुक्ति के बैरी भगाये गये, पाप की और शैतान की बेड़ियां जिनसे मैं जकड़ा था कट गयीं और मैं निर्बन्ध हो गया—मुझपर कृपा हुई। मैं कहांलों तेरा धन्यवाद करूं, तेरी स्तुति सदा मेरे मुंह में होगी।

केवल एक बात मैं तुझ स मांगता हूं, प्रिय तारक मुझे मत छोड़, अपना हाथ मुझपर से मत खींच। हे मेरी मुक्ति का परमेश्वर मेरे मन को एकाग्र कर कि मैं तेरे

नाम से डरूं, मुझे बचा रख कि मैं निश्चिन्त न होऊं परन्तु नित्य जागता रहूँ ऐसा न हो कि मैं बैरी से फिर बहकाया और पाप से फिर ठगाया जाऊं। तेरी कृपा मेरे मन को दृढ़ करे कि वह पाप से नित्य बैर करे और पाप के अवसर को नरक समान जानके अलग रहे। तूने मुझे निर्बन्ध किया, मुझे फिर दास न होने दे। तूने मेरे अन्तःकरण को अपने लिये पवित्र किया, उसको फिर अशुद्ध और भ्रष्ट होने मत दे। मेरा मन पवित्र आत्मा का मन्दिर और आनन्द और धर्म्म का घर नित नित ठहरें आमीन॥

भजन।

ईश्वर ने दया मुझ पर किन्हा
कि जिसके योग्य मैं न रहा
आश्चर्य्य की बात मैं यही गिना
मैं दया नहीं खोजता था।
अब मुझे हुआ यह निश्चय २
कि ईश्वर अत्यन्त कृपामय २॥
ईश्वर के दण्ड के योग्य मैं रहता
और वह अनुग्रह करता है
परमेश्वर आप प्रायश्चित करता
और खीष्ट के रक्त से तारता है।
यह हुआ क्यों और किस प्रकार ?
यह दया है अपरम्पार २॥

Copyright ANGP

चौथा चित्र ।

उस मनुष्य के मन की दशा जो ख्रष्ट के पुण्यप्रताप से ईश्वर से मिलाया गया है और क्रूश पर मारे गये ख्रष्ट को छोड़ और किसी बात को नहीं जानता है ।

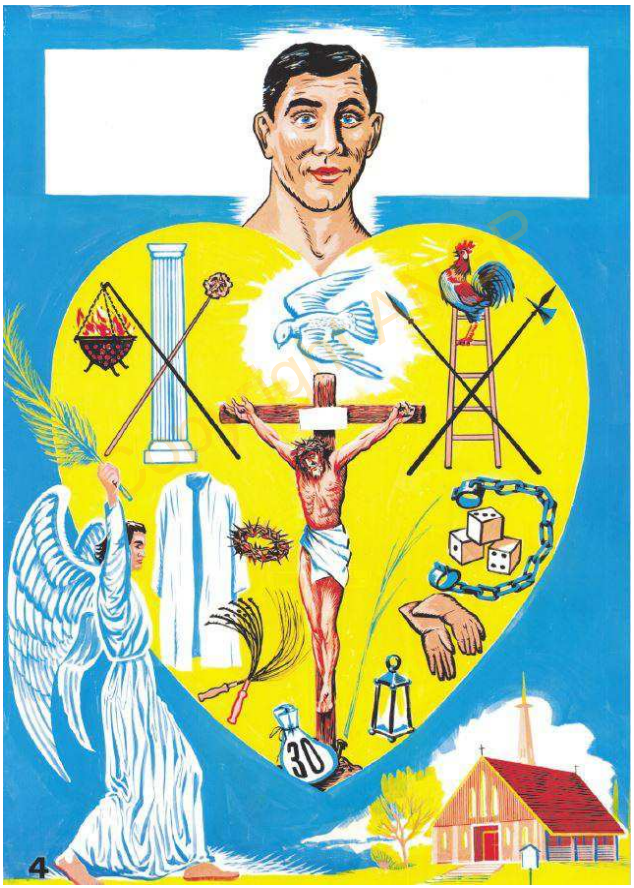

जिस पापीको ऐसी कृपा मिली उसके मनमें अब केवल क्रूश पर मारे गये ख्रीष्टके और उसके कष्टके चिन्ह देख पड़ते हैं क्योंकि पवित्र आत्मा जो अब उसके मनको हांकता और चलाता है उसमें प्रेमकी आग सुलगाने के हेतु वह नित्य यीशुके कष्टमय रूपको क्रूश पर लटकाये हुए हां उसके सारे दुःख को उसके साम्हने धरके चेताता है कि देखो तुम्हारे आनन्द के मोल लेने और कमाने में कितना बड़ा दाम लगा है। इस कारण अभी से नित्य यीशुके मरण और कष्टको ध्यान करना यही उसका निज काम है। वह पौलुस प्रेरित के साथ कहता है कि मैं ने यह ठहराया कि और किसी बात को न जानूँ केवल यीशु ख्रीष्ट को हां क्रूश पर मारे गये ख्रीष्ट को। १ कोरिन्थ २, २। और मुझ से ऐसा न होवे कि किसी और बात के बिषय में बड़ाई करूं केवल हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के क्रूश के बिषयमें जिसके द्वारा से जगत मेरे लेखे क्रूश पर चढ़ाया गया है और मैं जगत के लेखे। गलाती ६, १४।

वह पवित्र आत्मा की अगुवाई से अपने मेल कारक के कष्ट और मरण में इतनी शांति और बल पाता है कि उसका सारा मन उससे भर जाता है। वह कहता है यदि ईश्वर हमारी ओर है तो हमारे बिरुद्ध कौन होगा जिसने

निज पुत्र को न रख छोड़ परन्तु उसे हम सभों के लिये सौंप दिया सो उसके संग हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा ? रोमी ८, ३१-३२।

यीशु का मरण और कष्ट उसके लिये पिता परमेश्वर के उस सनातन प्रेम का बयाना है जिससे उसने हमको ख्रीष्ट में अपने से मिला लिया और हमारे अपराधों को हम पर नहीं लगाता है (२ कोरिन्थ ५, १६)। ख्रीष्ट जो क्रूश पर मारा गया उस भरोसा की नेव है जो वह परमेश्वर में और उसके सनातन प्रेम में रखता है। पिता परमेश्वर जिसने अपने पुत्र को हमारे लिये ऐसे कष्ट में दे दिया सो हमसे क्या रोक रखेगा ?

और जब इसी रीति से ख्रीष्ट जो क्रूश पर मारा गया उसका अपना हुआ और उसके मन में बसता है, तो उस में सब शांति का सोता और सब भलाई के लिये पूरा बल उसको मिलता है। वह ध्यान और जीवता बिश्वास जो मसीह पर रखता है और उसका प्रेम जिसने अपने को क्रूश पर खींचने दिया सो सकल सांसारिक सुखबिलास और सब शारीरिक कामना और लौकिक बिभव और नाशमान धन सम्पत्त उसके लिये घिनित और फीका कर डालते हैं। उसको ऐसा बुझाता है कि ख्रीष्ट जो क्रूश पर मारा गया उसको नित्य पुकारके कहता है कि "यदि तू मेरे पीछे हो

लेने चाहे और मेरा शिष्य होने चाहे तो अपना क्रूश उठाये हुए और अपनी इच्छा मारके मेरे पीछे हो ले" (मत्ती १६, २४) क्योंकि जो अपना क्रूश लेके मेरे पीछे नहीं आता है सो मेरे योग्य नहीं और मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। मत्ती १०, ३८। इसलिये उसके अन्तःकरण में यही मन कामना उपजती है कि मैं क्रूश पर मारे हुए खीष्ट के समान हो जाऊं, इस कारण वह ईश्वर की भक्ति का साधन करता और पवित्रता की चेष्टा करता है जिसके बिना कोई प्रभु को न देखेगा (इब्रानी १२, १४)। वह अपने को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करता और ईश्वर का भय रखता हुआ सम्पूर्ण पवित्रता को प्राप्त करने की चेष्टा करता है। (२ कोरिन्थ ७, १)। वह नित्य आत्मा में प्रार्थना और बिन्ती किया करता है। (एफेसी ६, १८)। वह भलाई और सहायता करने को नहीं भूलता है क्योंकि वह जानता है कि ईश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है। (इब्रानी १३, १६)। जब वह योग्य गिना जाता है कि खीष्ट के लिये निन्दा, उपद्रव, कष्ट और अपमान सहे तब वह आनन्दित होता है क्योंकि वह जानता है कि जब हम खीष्ट के साथ दुःख पाते हैं तो हम उसके सग महिमा भी पावेंगे, हां जिसने उसको प्यार किया और अपने को उसकी सन्ती दिया जिसके

लिये वह सब बातों में जयवन्त से भी अधिक है क्योंकि वह उस प्रतिफल पर दृष्टि करता है जो बड़ा है और उन सभों को दिया जाता है जो युद्ध में दृढ़ ठहरते हैं। "जो जय करे सो सब वस्तुओं को अधिकारी होगा" प्रकाशित २१, ७ यही बात उसके कानों में सुन पड़ती है इस लिये वह पीछे की बातें भूलता जाता पर आगे की बातों की ओर झपटता जाता है और ऊपर की बुलाहट जो ख्रीष्ट यीशु में ईश्वर की ओर से है झण्डा देखता हुआ उस बुलाहट के जयफल का पीछा करता है (फिलिपी ३, १३-१४)॥

प्रार्थना

हे प्रेम, हे क्रूश पर मारा हुआ प्रेम यीशु ख्रीष्ट, तूने मुझे परमेश्वर से मिलाया सो अभी से केवल तूही मेरे मन में देखा जायगा; तेरे लिये तेरे दुःख और मरण के स्मरण के लिये मेरा सारा मन और मेरा सारा जीवन समर्पण किया जाय। जिस प्रेम से तूने मुझे प्यार किया है, वही प्रेम मुझ में हो और मेरे सारे प्राण में पैठे। मेरी सब इन्द्रियों को साधे, मुझको सब बातों में चलावे। वह मुझे तेरे रूप के समान नया करे कि मैं सब बातों में तेरे समान हो जाऊं और तेरा दुःख और मरण मुझ में सम्पूर्ण देखा जावे मुझे ऐसा स्वभाव दे कि जो बातें आगे मेरे लेखे लाभ थीं उन्हें मैं ख्रीष्ट के कारण अब हानि समझूं, हां मैं सचमुच अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण सब

बस्तुओं की हानि उठाऊं और उन्हें कूड़ासा जानूँ। तू मेरे लिये सब कुछ हो जिस्तें मैं तुझको पाऊं और तुझ में पाया जाऊं, जिस्ते मैं अपने धर्म्म पर भरोसा न रखूं परन्तु तेरे ही धर्म्म पर, जो तुझ पर बिश्वास करने से मिलता है और जो अकेला ईश्वर के आगे योग्य ठहरता है। इस रीति से मैं तुझे और तेरे जी उठने का बल और तेरे दुःख उठाने की संगति को पहिचानूँ और तेरे मरण में तेरे समान हो जाऊं (फिलिपी २, ८-१०) यहां लों कि मैं निदान कह सकूं कि मैं ख्रीष्ट के संग क्रूश पर चढ़ाया गया हूँ, तौभी जीता हूँ अब तो मैं आप नहीं पर ख्रीष्ट मुझ में जीता है (गलाती २, २०)। हे मेरे परम प्रिय मुक्तिदाता तेरी ओर मैं ताकूं जो मेरे बिश्वास का कर्त्ता और सिद्ध करनेहारा है और जिसने उस आनन्द के लिये जो तेरे आगे धरा गया था, क्रूश को चुन लिया और लज्जा को तुच्छ जाना। तेरा जीवन मेरे प्राण का बिलास हो, तेरा क्रूश पाप की लड़ाई में मेरा बल हो, तेरी मृत्यु संकट और मरण में मेरी आशा रहे। हरएक परीक्षा में मैं तेरी ओर ताकू; सन्देह, क्लेश और कठिनता के समय में तेरा प्रेम मेरा सूर्य्य और ढाल, ज्योति और अगुवा हो कि मैं थका मांदा न होऊं परन्तु धीरज धरके उस दौड़ में दौड़ जाऊं जो मेरे लिये ठहरायी गई है. आमीन।

भजन ।

मन भजो मसीहको चितसे . वह तुम्हें उद्धारे नरकसे ।
जो मन भूलो मनसे वाको . तो कैसे बचोगे नरकसे ॥१
दुःख सुख दोनों वाके मनमें . वह तुम्हें बचावे बिपत्तसे ।
जब तुम पाप में डूबे रहे थे . वह आया बचाने स्वर्गसे ॥२
चार दिन का मरा था लाजर . वाको जिलाया कबरसे ।
भूले मत तू वाको आसी . वह तुझे चुना है जगतसे । ३

Copyright ANGP

पांचवां चित्र ।

ईश्वर भक्त की अंतरगति उसका मन जीवत ईश्वर का मन्दिर और पवित्र त्रित्वका घर ।

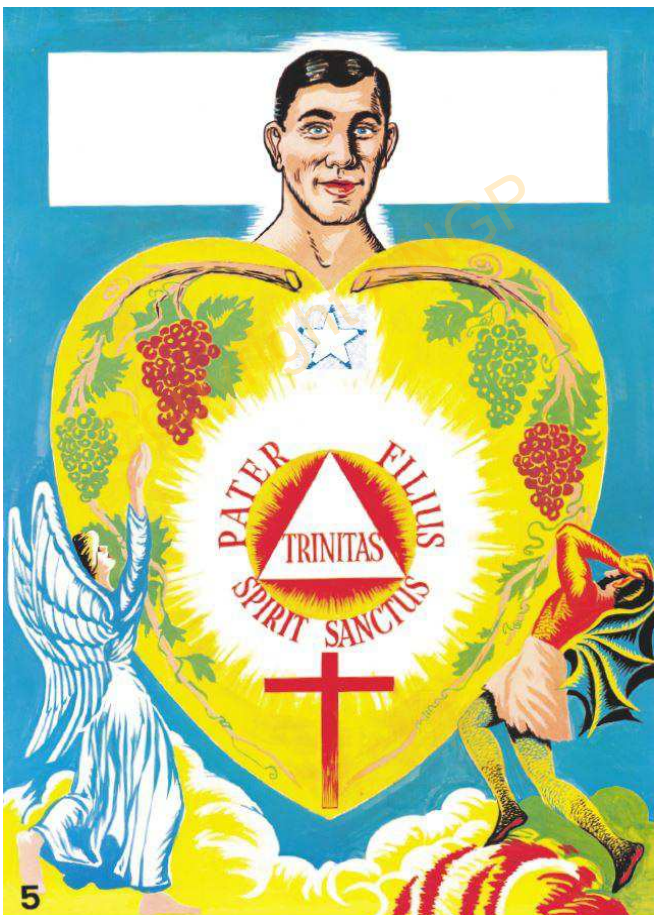

जिस पापी पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ और जो पवित्र आत्मा से पवित्र किया गया उसके मन में अब पवित्र त्रित्व अर्थात् पिता पुत्र और पवित्र आत्मा प्रगट होता है; क्योंकि ख्रीष्ट कहता है कि जो कोई मुझे प्यार करे तो मेरी बात को पालन करेगा और हम उस पास आवेंगे और उसके संग बास करेंगे। योहन १४, २३। ऐसी प्रतिष्ठा और महिमा उस ख्रिस्तान की होती है जो ख्रीष्ट के लोहू के द्वारा परमेश्वर से मिलाया गया और पापों से धोया गया और अब गुणगाण कर ख्रीष्ट अपने मुक्तिदाता से सब से अधिक प्रीति रखता है और उसको प्यार करके उसकी आज्ञाओं को मानता है। सनातन का ईश्वर तब उसमें आके डेरा करता है। पिता उसको पुत्र के कारण प्यार करता है और उससे भेंट करता है। पिता पुत्र और पवित्र आत्मा उसके पास रहते और बास करते हैं; इस कारण। पौलुस प्रेरित यों लिखा है कि "क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम ईश्वर के मन्दिर हो और ईश्वर का आत्मा तुममें बसता है? यदि कोई मनुष्य ईश्वर के मन्दिर को नाश करे तो ईश्वर उसको नाश करेगा, क्योंकि ईश्वर का मन्दिर पवित्र है और वह मन्दिर तुम हो।" १ कोरिन्थ ३, १६-१७। और फिर वह लिखता है कि "तुम जीवते ईश्वर के मन्दिर हो जैसा ईश्वर ने कहा कि मैं उन में बसूंगा और उनमें फिरूंगा और मैं उसका ईश्वर होऊंगा और वे मेरे लोग होंगे"। २ कोरिन्थ ६, १६।

पवित्र त्रित्व के सिवाय मन में ख्रीष्ट का क्रूश भी देखा जाता है, क्योंकि इसको ख्रिस्तान भूल नहीं सकता और मन और चितमेंसे फिर दूर नहीं कर सकता है। यीशु जो क्रूश पर मारा गया, उसका कष्ट और मरण, उसका पुण्य प्रताप यह सब नित उसके बिश्वास और भरोसे की नेव और उसके प्रेम का मूल बना रहता है। वह पिता अथवा पुत्र अथवा पवित्रआत्मा पर अन्तर की आंख लगावे, वह परमेश्वर से कितना ही लीन होय और आनन्द में कितना ही डूबा रहे, इस पर भी वह नित चेत करता और पूछता है कि यह बिना कमाई कृपा मुझ पर कहां से हुई और यह उत्तर पाता है कि ख्रीष्ट से यह हुआ जो क्रूश पर मारा गया जिसने मुझे अपने मरण से ईश्वर से मिलाया। उसी ने पाप, स्राप और मृत्यु को अपने क्रूश के द्वारा मुझ पर से उतारा और कृपा मुक्ति और जीवन मेरे लिये प्राप्त किया और मुझे दान किया और मैं जो कुछ हूँ सो उसी की कृपा और कमाई से हूँ।

उन सात महा पापों के बदले जो ख्रीष्ट को छोड़ उसके मन में भरे थे और उसको शैतान का कारखाना बनाये थे, अब हम उसके बिपरीत गुण उसमें देखते हैं अर्थात् दीनताई, प्रेम, शुद्धता, दानशीलता, ब्रत, नेम, संयम, धीरज, नम्रता, यत्न, ध्यान।

यीशुकी आज्ञाओं के मानने से अर्थात उस पर बिश्वास करने से, उसको प्यार करने से उसके पीछे हो लेने से, उसके समान होने से, बड़े २ फल मिलते हैं क्योंकि जो सत्यता और प्रेम से उसके बचन को मानता है उसको यह प्रतिज्ञा दी गई कि परमेश्वर आप ऐसे मन में बास करेगा; तो इसमें कौन सारे सामर्थ्य से यत्न नहीं करेगा ! वाह, हम उसको प्यार करें क्योंकि पहले उसने हमें प्यार किया; ईश्वर प्रेम है और जो प्रेम में रहता है सो ईश्वर में रहता है और ईश्वर उसमें। १ योहन ४, १६+१६। ऐसा योहन जो यीशुका प्यारा शिष्य था पुकारता है। इस जीवन में हम लोग परमेश्वर के ऐसे समीप हो सकते हैं, इस जीवन में भी परमेश्वर हम लोगों से ऐसी भेंट कर सकता है, तो फिर हम लोग भी ऐसे महा प्रतिष्ठित महात्मा पाहुन के समीप रहने और उससे भेंट करने की और उस की आंखों के सामने चलने की चेष्टा करें। अहा हम उस में रहने की, उसके सामने चलने की और अपने को उसके हाथ में सौंपने की चेष्टा करें क्योंकि ईश्वर आप ही हममें बास करता और रहता है।

जो कुछ हमारे बाहर है सो सब नाश होने वाला है। सारा संसार अपने सारे विभव समेत नाश हो जाता है, परन्तु ईश्वर और ख्रीष्ट जो हममें है सदा रहता है, और जब हम उसमें लगे रहें तो हम उसके संग एकही आत्मा

हैं। (१ कोरिन्थ ६, १७)। उसने तो हमें अत्यन्त बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं दी है कि जो नष्टता कामअभिलाष के द्वारा जगत में हैं उससे बचके हम लोग ईश्वरीय स्वभाव के भागी हो जावें। २ पतरस १, ४। आओ हम उसपर बिश्वास करें और जैसा कि उसको देखते हैं उसको धरे रहें। जो उसपर बिश्वास करता है उसका यहां भी अनन्त जीवन है। (योहन ६, ४७)।

—:o:—

प्रार्थना।

हे पवित्र और समस्त प्रेम योग्य परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का पिता और हमारा पिता भी, तू मनुष्यों को कैसा प्यार करता है, तूने मुझ अधम दीनहीन पापी को कैसा प्यार किया और अपने पुत्र यीशु ख्रीष्ट में कैसा सुखी और हर्षित किया, तू मुझ में बास करने चाहता है, तू मुझ में रहता है और मैं तुझ में। कैसा समीप सम्बन्ध तू मुझ से रखता है और मैं तेरी ओर से ईश्वर की सारी पूर्णता लों पूरा किया गया हूं (एफेसी ३, १६)। क्या मैं तुझे न प्यार करू, क्या अपने सारे प्राण से और सारे मन से और अपने सारे सामर्थ्य से तुझे न चाहूँ? यह प्रेम कृपा करके मुझे दे। जैसा तू प्रेम ही है वैसा मुझे भी प्रेम ही बना दे। मुझे अधिक २ करके पहिचानने दे कि तू मेरे निकट है जिस्तें अधिक २ करके तुझ से

मिलाया जाऊं। यह दे कि मैं तेरे प्रेम से किसी बात के द्वारा अलग न किया जाऊं। तू मेरे मन को अपना सनातन का निवास ठहरा और मेरे आत्मा को अपने ही पास भीतर खींच ले कि मैं केवल तुझको प्यार करूं केवल तुझी में लगा रहूँ और तुझ को छोड़ सब बस्तुओं को तुच्छ करू। दया कर कि मैं तुझे सब बातों में देखूं तुझको सब बातों में पाऊं, सब कुछ तेरे लिये करूं और सहूं जिस से तू मेरा सब कुछ होवे, तू जो मेरे मन का इष्ट और मेरा सनातन का भाग है॥ आमीन॥

——)०(——

भजन।

मन मन्दिर आए प्रभु यीशु · कीजे अपनो बासा जी।
यही अपावन मन्दिर माझे · शत्रून डारयो पासा जी॥
प्रभु तुम ताको काटि दुरावो · दिखाय दण्डक त्रासा जी॥१
चौंदश घेरे बिषय बिरोधी · मन बच काया ग्रासा जी।
काह करों कछु सूझत नाहीं · तेरा त्राण का आशा जी॥२
जोग न जौं पैहों प्रभु तेरो · करहू दया प्रकाशा जी।
बिपत्ति सह्यो तुम दुखितन कारण · मेरी यही दिलाशा जी॥३
और करो मति मोर परिक्षण · छनिक भरे यही श्वासा जी।
केते पतितन तुम तारयो प्रभु · जानहु तेरी दासा जी॥४

——(:०:)——

छटवाँ चित्र ।

उस मनुष्य के मन की दशा जिसका प्रेम फिर ठंढा होता और जो संसार को प्यार करने का आरम्भ करता है ।

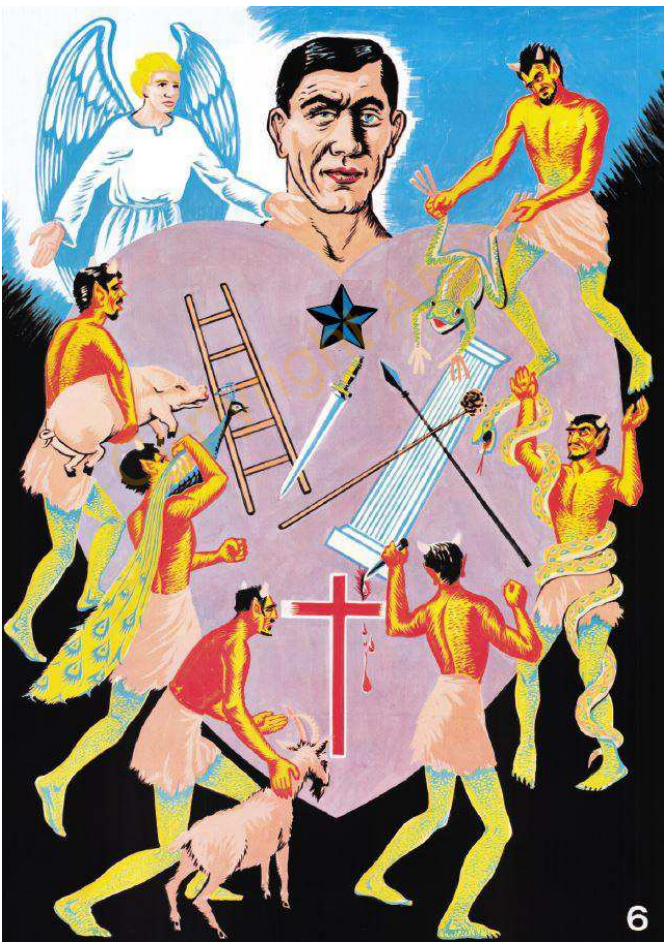

हम इस तसवीर में एक ऐसा मुंह देखते हैं जिसकी एक आंख ढिठाई से चारों ओर ताकती है और दूसरी आंख निद्रालुसी है। उसके मन में यीशु के कष्ट के चिन्ह घट गये, कृपा की चिनगारियां बुझ गयीं और बिश्वास के तारे की झलक जाती रही। इसका अर्थ यह है कि जब मनुष्य भले कामों में ढीला और ठंढा हो जाता, प्रार्थना और जागने में आलसी होता और इसके बिरुद्ध संसार की व्यर्थ बस्तुओं की ओर ताकता है और संसार और शारीरिक सुख बिलास, मान और सुख भोग अधिक खोजता और उसमें फंसता है, तब वह मुक्तिदायक के कष्ट को कम स्मरण करता है और अपने बिश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेहारे अर्थात यीशु की ओर थोड़ासा ताकता है। ऐसा जन उसको थोड़ी देर में मन में से खो देता, उस की ध्यान की आंच बुझ जाती है, यीशु का प्रेम ठंढा हो जाता है, कृपा जाती रहती बिश्वास डोलता और मरता है, उसके मनमें अंधयारा, ठढा और सूखा फैल जाता हैं, वह थकता और निराश होता और तब क्या होता है ?

वह पुरुष जो हाथ में कटार लिये खड़ा है अर्थात संसार बरबस उसके मन में फिर पैठता है और क्या कि उस में बिश्वास का बल, साहस जोत प्रकास और प्रेम न रहा इस लिये वह संसार की धमकी से डरता है अथवा उसके लल्लोपतो और फुसलाने से ठगा जाता और संसार से फिर प्रेम करने लगता है।

ऐसी दशा में शैतान भी फिर आता और उन पुराने पशुओं को मन में फेर लाता है और यह उससे सहज में बन पड़ता है क्योंकि वह मनुष्य प्रार्थना में आलसी हो गया और पाप के अवसर से नहीं भागता बरन उसको ढूंढ़ता है। इस कारण शैतान फाटक पर न पहरा न कोई रोकटोक पाता है।

ईश्वर का दूत अर्थात ख्रीष्ट की कृपा शैतान को सचमुच रोकने और हटाने चाहता है परन्तु इसलिये कि मनुष्य पाप के लिये द्वार और फाटक फिर खोलता है, न जागता और न प्रार्थना करता है, कृपा को तुच्छ करके यत्न नहीं करता, पाप और पापके द्वारा शैतान फिर मनमें समाता है।

ख्रीष्टने जो बचन कहा है सो यहां काम आता है अर्थात "जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो"। प्रार्थना ख्रिस्तान की धर्म्मभक्ति का जीव और प्राण है, जहां प्रार्थना घटती है तहां सब धर्म्म और भक्ति घटती है। प्रार्थना आत्माका स्वास लेना है, जहां वह रुकता है तहां सब भलाई मरती है। ऐसे ही जब हम नहीं जागने पर ऊंघते हैं तब बैरी आके गेहूँ के बीच जंगली दाना बोता है।

वह मन जो बेरखवाल और बेहथियार है सब दुष्टों अर्थात पाप और शैतान के लिये खुला है, इसलिये वह पवित्र पहरा, प्रार्थना और ध्यान और क्रूश पर मारे हुए

यीशु पर ताकना, कभी अपने पास से दूर मत होने दे, कभी ऊघने न दे, जिस्में कोई अपवित्र वस्तु परमेश्वर के मंदिर में न घुसे और उसको नाश न करे, नहीं तो परमेश्वर तुझे भी नाश कर देगा। सचेत हो जागते रहो क्योंकि तुम्हारा बैरी शैतान गरजते हुए सिंह की नाईं ढूंढ़ता फिरता है कि किसी का निगल जाय, बिश्वास में दृढ़ होके उसका सामना करो। १ पतरस ५, ८ ६। जो कोई समझता है कि मैं खड़ा हूँ सो सचेत रहे कि गिर न पड़े। १ कोरन्थ १०, १२। जो जो हथियार पौलुस प्रेरित एफेसी ६, १३-१८ तक स्पष्ट बर्णन करता है सो हमको कभी उतारना न चाहिये क्योंकि जैसा १२ वें पद में कहा गया, हमारा यह युद्ध लोहू और मांस से नहीं है परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से और इस संसार के अन्धकार के महाराजाओं से और आकाश में की दुष्टता की आत्मिक सेना से जो अग्निबाणों से हमको सताते हैं, उनको हम केवल बिश्वास की ढाल से बुझा सकते हैं। इसलिये बिश्वास सदा दृढ़ और सजीव और प्रन नित्य तप्त होना चाहिये। और यह कब हो सकता है? जब हम यीशु को और उसके कष्ट को कभी अपनी आंख के सामहने से और अपने हृदय में से जाने न देंगे जब हम अपनी दृष्टि को संसार और उसके लुभाने से फिरावेंगे और सदा यीशु की ओर ताकेंगे। आगे जब हम अपने मन के किवाड़ में कीली चढ़ावेंगे कि

पाप की लालसा भीतर न आवे और जब हम ईश्वर की संगति में रहेंगे और उससे नित्य बोल-चाल करेंगे और उसकी कृपा की शिक्षा और पवित्र आत्मा का चलाना नित्य स्मरण करेंगे और मानेंगे क्योंकि जब यीशु जो क्रूश पर मारा गया, मन में से जायगा तो बिश्वास का बल ज्योति और जीवन भी जायगा, और प्रेम की उस नेव के हटने से वह भी ठंढा हो जायगा।

प्रार्थना।

हे प्रभु, तू मुझे जांचता है और पहिचानता है। हे मनके भेदके जाननेहारे, तू मेरी निर्बलता और मेरे मन की चंचलता को जानता है कि वह कैसे सहज से प्रेम में ठढा और बिश्वास में निर्बल हो जाता है। तू यह भी जानता है कि मैं पाप की ओर संसार की ओर कितना ही झुकता हूँ और कि मैं अपनी इच्छा को मारने और अपने मनकी चौकसी करने में कितना ही आलसी हूं सो तू मुझे बल दे, मुझे जिला, मुझे संभाल और दृढ़ वो पोढ़ा कर क्योंकि तुझ बिना मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ। मुझे मत छोड़, अपना हाथ मुझ पर से मत खींच ले। हे परमेश्वर मेरा त्राणी जब तू मुझे न थांभे, तो मैं तुझ में नहीं रह सकता हूँ। वह ज्योति जो मुझ में है बुझने न दे, प्रेम को ठंढा होने भरोसा और विश्वास को डोलने और मरने न दे, बरन मुझे सदा नया बल और प्रार्थना करने की इच्छा

और तेरी ओर ध्यान लगाने की चाह दे। मेरी आंखें जगा कि मैं नित्य तुझी में लिप्त रहूं और नित्य तेरे कष्ट के ध्यान में मगन होऊं और अनर्थ वस्तुओं पर दृष्टि करने से मेरी आखों को रोक रख। आमीन ॥

—:o:—

भजन।

छोड़ जगको माया मनुआ . या जगमें सुख नहीं मनुआ।
इस जगको परतीत न कीजै . झूठा है यह जग रे मनुआ ।१
यीशु मसीहको शरणगहो तुम . तब सरगवास तुम पैहो मनुआ।
यह तन में मन भूले हो . इस में तो है दुःख रे मनुआ ॥२
वाहिसमै में क्या करिहो तुम . जब विनसनलगि है कायामनुआ।
इतनी मिनती आसीकी सुनियो . यीशु है बचवैया मनुआ ३

—:o:—

सातवां चित्र ।

इस मनुष्य का मन जो बिश्वास से फिर जाके जान बूझके पाप करता और पाप और शैतान को अपने मनमें राज करने देता है ।

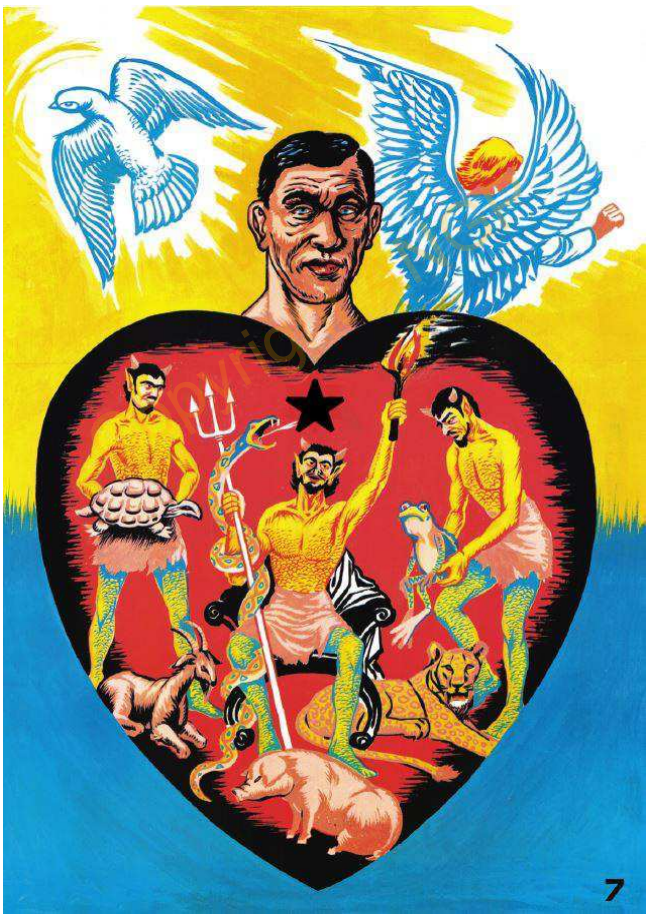

यह तसबीर ऐसे पाप को अन्तर की दशा दिखलाती है जिसको ख्रीष्ट लूक ११, २४-२६ में इस रीति से बर्णन करता है कि "जब अशुद्ध भूत मनुष्य से निकल जाता है तब सूखे स्थानों में बिश्राम ढूंढ़ता फिरता है परन्तु जब नहीं पाता है तब कहता है कि मैं अपने घर में जहां से निकला फिर जाऊंगा और वह आके उसे झाड़ा बुहारा पाता है तब वह जाके अपने से अधिक दुष्ट सात और भूतों को ले आता है और वे भीतर पैठके वहां बास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहली से बुरी होती है"।

यह कैसी भयंकर दृष्टि है। जो मन पहले परमेश्वर का घर और पवित्र आत्मा का मन्दिर था उस में अब शैतान फिर रहता, राज करता और आज्ञा देता है। पुराने पाप और पाप की इच्छा फिर वहा देखो जा ी, वे घृणित पशु फिर पैठ के जैसे अपने ही घर में बास करते हैं। और यह कैसे हुआ ? क्योंकि मनुष्य ने उस कृपा को जो उसको मिली थी चौकसी से नहीं रखा और अपने अगले पापों से शुद्ध होना भूल गया और भक्ति और पवित्रता में बढ़ने का यत्न नहीं किया। परन्तु जो आगे नहीं बढ़ता सो पीछे हटता है इस बात में खड़ा होना नहीं बनता है। जो द्वार में प्रवेश करने की चेष्टा नहीं करता है और जो सकरे मार्ग में बढ़ने का साहस और बीरता नहीं करता है और पाप से बैर करने और संसार को और उसकी

लालसा को त्यागने की सामर्थ्य नहीं ढूंढ़ता और पापके हरएक अवसर से नहीं भागता तिसको शैतान का छल और पाप का अभिलाष और संसार की कामना थोड़े समय में फिर अपने जाल में खींचती है। जैसे पितर प्रेरित का कहना पूरा होता है "कि कुत्ता अपने ही छाट को और धोयी हुई सूअरी कीचड़ में लोटने को फिर गई"। २ पितर २, २२। अर्थात असावधान और निश्चिन्त मनुष्य अपने पुराने पापों में फिर फंसता है और अपने अभिलाषों में अपने को फिर सौंप देता है। पवित्र आत्मा भागता है क्योंकि ईश्वर का पवित्रात्मा अशुद्ध भूत के सग नहीं रह सकता है। परमेश्वर का मदिर और भूतों का बास एक ही मन में क्योंकर हो सकता है ?

ईश्वर का दूत अर्थात कृपा शोकित होके चला जाता है परन्तु हाथ जोड़े हुए चला जाता है जिसका अर्थ यह है कि ख्रीष्ट ऐसे अधम पापी पर अब तक दयालू है और मान बिन्ती करके कहता है "हाय कि तू अपने कुशल की बातें अब भी जो जानता, ईश्वर की गोद, तेरे कृपा निधान तारक का मन अब तक खुला हुआ है। हे उलटने वाले मनुष्य फिर आ, मैं अब की बेर भी तुझ पर दया करूंगा," परन्तु वह सुनता नहीं, वह ढिठाई से चारों ओर ताकता है, वह गुप्त और प्रगट पापको, और निन्दा को तुच्छ नहीं बुझता है वह उस कुँड को जिसमें वह अपने को गिरा देता है, नहीं

देखता और उन घृणित वस्तुओं को जो उसके मन में है नहीं जानता है क्योंकि उसका विश्वास मर गया, तारे की ज्योति सब ही जाती रही और शैतान ने उसकी आंखों को बन्द किया है।

देख प्रिय संगी यात्री यह तेरी दशा है। जब तू ने पश्चात्ताप करके और कृपा प्राप्त करके पापमोचण पाया परन्तु इसके पीछे परमेश्वर की कृपा के द्वारा से पाप से चौकस नहीं रहता बरन अपने को फिर फिर उसके हाथ में डाल देता है तो अब तेरी दशा अगली दशा से अधिक बुरी हो गई क्योंकि पाप और शैतानने अब अधिक बल पाया और वे मुझ में अति क्रोध से बिराजते हैं और तू उन का दास सम्पूर्ण रूप से हो गया। इस कारण अपने पुराने पापों और व्यवहारों में फंसने से चौकस रह। जब तू ने कृपा पाई और शैतान को त्यागा और अहंकार से, लोभ से छिनारपन से, डाह से, मस्ती से, क्रोध से और आलस्य से लड़ने को ठाना तो सदा उनका बैरी बना रह और उनको कभी अपने मन में फिर सिर उठाने मत दे बरन उन्हें दबा और जहां और जिस रीति से बन पड़े तू उनसे भाग क्योंकि वे तो नित्य २ फिर आवेंगे पुरानी सराय में टिकने को और अपने पुराने अधिकार का दावा फिर करेंगे. और जब तू उन्हें दांव और स्थान देगा तो तेरी पिछली दशा पहिली से बुरी होगी। ईश्वर पर भरोसा रख, वह तेरी

सहायता करने के लिये और तुझे जय देने के लिये बहुत सामर्थ रखता है। जब तू कभी हारे भी, तो मत हार मान परन्तु फिर उठ, खड़ा हो और फिर लड़। कभी पाप से मेल मत कर, पर सदा सर्वसामर्थी निस्तारक का हाथ धर ले, वह तेरी सहायता कर सकता और करने भी चाहता है। उसकी बांह छोटी नहीं है, वह शैतान से बली है, वह हथियार बांधे हुए बलवान को बांधने और निकाल देने में सामर्थी है। वह उसकी लूट उससे छीन सकता और तुझे निर्बन्ध कर सकता है। तू परमेश्वर का मन्दिर हो और रह सकता है तो अपने मनको शैतान और भूत का माद क्यों होने देता है।

प्रार्थना।

हे परमेश्वर तू मेरा भी ईश्वर मेरा भी पिता है, क्योंकि मैं तेरा बनाया हुआ हूँ और तूने मुझे उत्पन्न किया है। हे प्यारे खीष्ट प्रभु मैं तेरा तारित, तू मेरा मुक्तिदायक है और परमेश्वर से मेरे लिये बुद्धि और धर्म्म, पवित्रता और मोक्ष ठहराया गया है तू मेरे लिये भी परमेश्वर की दहिनी ओर बैठा है और सब सामर्थ्य और पराक्रम अपने हाथ में रखता है कि यद्यपि मैं उनका दास और बन्धुवा हूं तू मुझे पाप और मृत्यु और शैतान से छुड़ावे। तूने दंगैतों के लिये भी दानों को पाया तो मैं तुझ से फिर गया हूं मेरे लिये भी तू सब पापियों को ग्रहण करता है और किसी को दूर नहीं

करता है जो तेरी ओर फिरता है देख यहां मैं भी आया और त्राहि त्राहि करता हूं। तू सब को बचाने चाहता है और बचा भी सकता है। कोई ऐसे अथाह कुँड में नहीं पड़ा है कि तू उसको निकाल न सके। मुझे भी पाप और शैतान की बंधुवाई से छुड़ाले, उनका राज मुझ में आगे न रहे। मेरा मन तेरा है; तूने उसको अपने लोहू से मोल लिया है, तू उसको किसी दूसरे को नहीं दे सकता है। अपना उंजायाला भेज कि अन्धियारा दूर होवे और अपना आत्मा मुझे दे कि शैतान भागे। मुझ पर ऐसी कृपा कर कि पाप का डंक टूट जावे। शैतान का मेरे पांव तले लताड़ और उसका बल नाश कर। मुझे निर्बन्ध होने दे। आमीन॥

भजन।

मसीह जीको सुमारो भाइ · तुम स्वर्गधाम सुख पाई॥
सुमरण कीजे चितमें लिजे · सत्य शीलता पाई ।
आनन्द होके जय जय कीजे · अन्तर ध्यान लगाई ॥१
यह जिन्दगानी फूल समानी · धूप पड़े कुम्हलाई ।
अवसर चूक फेर पछि तैहो · आखिर धक्का खाई ॥२
जो चेते सो होत सवेरे · क्या सोचे मन लाई।
कुल परिवार काम नहीं आवे · प्राण छूट छिन जाई॥३
सत्य पदार्थ ख्रीष्ट जग आये · सब पापी अपनाई ।
निहचल बास करो निश बासर · अमर नगर को जाई ॥४
अन्तर मैल भरो बहु भावो · सुद्धि बुद्धि में बिसराई।
यीशु नाम की बिन्ती कीजे · अवगुण में गुण पाई॥५

—:o:—

आठ । चित्र ।

अधर्म्मी की मृत्यु और पाप का फळ ।

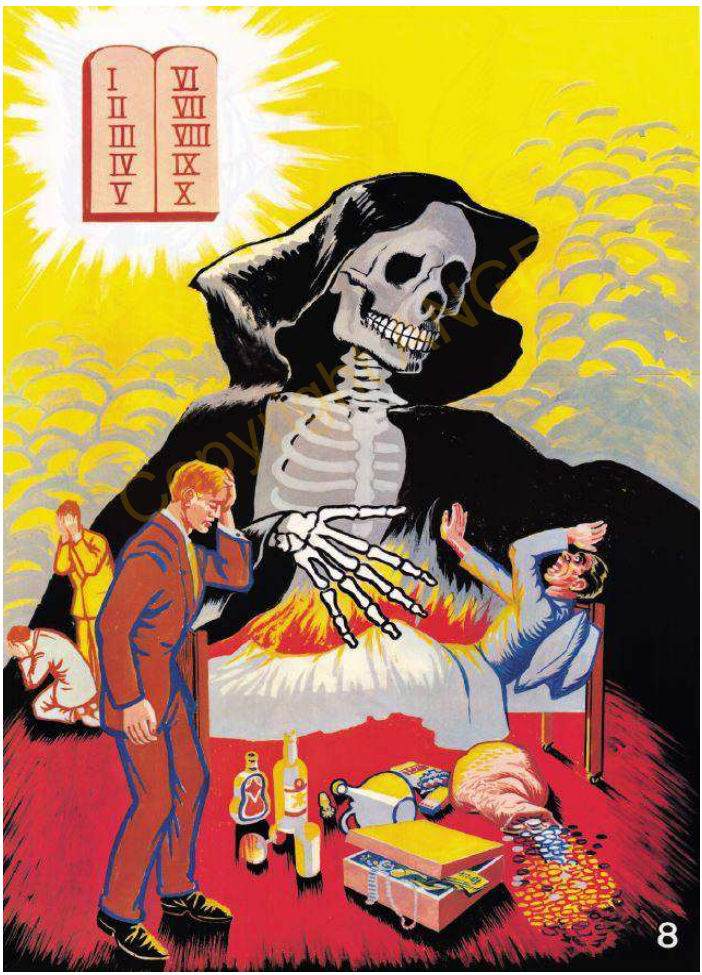

यह पश्चात्ताप रहित पापी मृत्यु की घड़ी में अपने बिछौने पर पड़ा है। सब देह में पीड़ा, आत्मा में डर और भय, मृत्यु की शंका और त्रास और आने वाले बिचार का डर उसका पकड़े हैं। वह सर्बदा त्यागा हुआ सहायक बिना और शांति पाने के योग्य नहीं क्योंकि वह बिश्वास नहीं करता, ईश्वर को और तारक को नहीं पहिचानता, काल उसकी आंखों सामने खड़ा है और उसको धिराता है कि मैं सब कुछ छीन लेऊंगा अर्थात सारे बिलास, सब सम्पत्ति, आदर, सुखभोग सब कुछ सम्पूर्ण रूपसे ले लूंगा। शैतान उसके पापों को उसकी आंखों के सामने रखता है। पहले उसने उसको पाप करने के लिये फुसलाया और पाप को उसकी दृष्टि में मनभावन और सुहावना दिखलाया अब वह उसको उससे डराता है उसके मन को दुखाता और पाप का फल उसको दिखाता है जो उसको मिलने वाला है अर्थात सर्बदा का सन्ताप, सनातन का दण्ड भोग और निरन्तर नरककी पीड़ा सहना, निराश होके वह चारों ओर ताकता है और सर्वत्र केवल भयंकर भूतका रूप देखता है। अन्तर में उसका बिवेक जो अब तक सोया था पर अभी बड़े सामर्थ से जाग उठा है, उसको दुखाता और नरक के क्लेश में डालता है। वह नरक के कुँड को खुला देखता जो तैयार है कि उसको सनातन के लिये निगल लेवे। वह कोई धर्म्म की बात आगे सुन नहीं सकता क्योंकि उसने अपना

मन सारे धर्म्म के लिये कठोर किया और ईश्वर के बचन के लिये बहिरा कर डाला वह अपना मन उत्तम दूत अर्थात कृपा की ओर से फेर लेता है इस कारण यह भी उसे हट जाता और उसको निराशता में छोड़ जाता है जिसमें उस ने अपने ढिठाई से अपने को सौंप दिया है। इस दशा में वह प्राण त्यागता है और ख्रीष्ट के न्याय के सिंहासन के आगे खड़ा होके उसके मुंह से जिसको उसने जगत में तुच्छ किया, जिसका बचन न सुना अथवा फिर भूल गया, जिसकी कृपा को उसने हलका जाना, जिसका लोहू उसने पांव तले रौंदा, उस न्यायी के मुंह से अब यह अटल दण्ड आज्ञा सुनता है कि "दूर हो स्रापित अनन्त अग्नि में जा"।

यह पाप का और संसार के सुख बिलास का प्रतिफल है। परमेश्वर को आज्ञा से स्रापित होके स्वर्ग से और ईश्वर के सन्मुख से सनातन लों निकाला जाके वह उस कुँड में गिरता है उस सदा सन्तापमय दशा में ऐसी अग्नि में जो कभी नहीं बुझती और वह एक कीड़े से काटा जाता है जो कभी नहीं मरता है।

हाय हाय कितने मनुष्य इस सर्बदा के बिनाश की ओर दौड़ते हैं; कितने जो ख्रिस्तान कहलाते और कहलाने चाहते हैं पाप को सेवा करते और अशुद्ध अभिलाषों में जीते हैं अर्थात काम में, लोभ वा लुटाव में, अभिमान वा डाह में, दुष्ट आनन्द में, अशुद्धता में, आलस्य में, क्रोध में, मस्ती और मत

बालपन में वा सब कामातुरता में। वे कदाचित कभी कभी अपने पापों को स्वीकार करते हैं परन्तु कुछ अपने को सुधारने के लिये नहीं, केवल दखा देखी करके। वे फिर पाप करते हैं और पाप के व्यवहारों में बने रहते हैं। वे फिर पाप को मान लेते हैं और फिर पाप को करते हैं और अपने मरने तक इसी रीति से किया करते हैं। न वे कभी अपने मन को बदल देते, न कभी अपने पापों से शोकित होते, न सारे मन से खीष्ठ और तारक की ओर फिरते हैं, न उसकी कृपा और दया को खोजते हैं, गिरजे में जाके सक्रामेन्ट में साझी होके परमेश्वर के बचन का प्रचार सुन के और धर्म्म की दूसरी बातों में मिलके भी वे पुराने मनुष्य बने रहते हैं, वे पाप के दास, संसार के सन्तान, शैतान के गुलाम हैं। जितना अधिक वे अपने बाहरी गिरजा के दस्तूरों में चेउा दिखाते उतना अधिक वे उनपर फूलते हैं कि मानो मन को पाप से फिरना और पवित्र होना आवश्यक नहीं है। एका एक मृत्यु आके उन्हें ले जाती है और जैसा उन्होंने शरीर पर बोया है तैसा शरीर से विनाश को लवते हैं क्योंकि आदमी जो कुछ बोता है सोही लावेगा

विशेष करके उन लोगों की मृत्यु भयकर है जिन्होंने एक बेर कृपा पाई थी परन्तु उसका तुच्छ किया, जिन्होंने एक बेर खीष्ट को पहिचाना पर उसके पास नहीं रहे, उसको फिर त्यागा और संसार और पाप से फिर मिल गये क्योंकि

पौलुस प्रेरित कहता है कि "जो हम सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के पीछे जान बूझ के पाप किया करें तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान नहीं परन्तु दण्ड की भयंकर बाट जोहना और बिरोधियों को भक्षण करने वाली आग का ज्वलन रह गया क्योंकि जिन्होंने एक बेर ज्योति पाई और स्वर्गीय दान का स्वाद चीखा, और पवित्रात्मा के भागी हुए और ईश्वर का भले बचन का और होनहार जगत की शक्ति का स्वाद चीखा और पतित हुए हैं उन लोगों को पश्चात्ताप के निमित्त फिर के नये करना अन्होना है क्योंकि वे ईश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूश पर चढ़ाते और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं" इब्रानी १०, २६-२७ और ६, ४-६।

हे पापियो जो अपने अभिलाषों के बस में रहते हो, आहा, तुम जानते हो कि तुम क्या प्यार करते हो! तुम मृत्यु को और बिनाश को प्यार करते हो जो तुमको अब फुसलाता है सो तुमको एक दिन पीड़ा देगा, अपने बुरे मार्गों को सोचो, और बुराई से घिन्न करो, पाप के भोग बिलास को त्यागो, वह तुमको नाश कर देगा। अपने अच्छे चरवाहे योशु ख्रीष्ट की दया का शब्द तो सुनो जो तुमको बुलाता है कि "मेरे पास आओ मेरा लोहू तुमको तुम्हारे पापों से पवित्र करता है, मैं तुम्हारा अपराध क्षमा करता हूँ, और तुम्हें मुक्ति देता हूं, मैं अपने भेड़ों को अनन्त जीवन देता हूँ। अपने अच्छे गड़ेरिये के शब्द को सुन के

अपने मन को कठोर मत करो ऐसा न हो कि तुम न्याय के दिन में न्यायक के गरजने वाले शब्द को सुनो कि 'दूर हो हे स्रापितो, अनन्त अग्नि में प्रवेश कर।"। जीवते ईश्वर के हाथ में पड़ना भयंकर बात है। इब्रानी १०, ३१।

प्रार्थना।

हे परमेश्वर तू न्यायी है और तेरे सारे बिचार सच है। तू किसी का पक्ष नहीं करता परन्तु हरएक को उसके कामोंके समान बदला देता है, जो कोई पश्चात्ताप नहीं करता और तेरे बचन को नहीं मानता और नहीं पालन करता, उसका न्याय हो चुका, वह जीवन का नहीं देखेगा परन्तु सदालों मृत्यु में रहेगा। जैसा तू धर्म्मियों और बिश्वासियों पर दयालु है वैसा तू पश्चात्ताप हीन पापियों पर जो तेरी ओर फिरने नहीं चाहते हैं भयानक क्रोधित है। हे प्रभु और मुक्तिदाता तूने मुझे पाप और मृत्यु और नरक से छुड़ाया मुझे बल दे कि मैं समय पर अपने मन को पाप से फिराऊं और तेरी ओर लगाऊं। मुझे जगा कि मैं मृत्यु से छुड़ाय. जाऊं, और जीवन को पाऊं। मेरे मन को चूर्ण कर कि मैं सच्चा पश्चात्ताप करू, तेरे आत्मा का चलाना मानूं और उससे नया मनुष्य बन जाके तेरे लिये जीऊं और तेरे लिये मरूं। आमीन।

Copyright ANCP

भजन ।

जो तुम पर नहीं मन लावे ।
भ्रमे सो नित पाप डगर में · चिन्ता दुर मन भावे ॥
परहिंसा परनिन्दा पाछे · हुलसित निशि दिन धावे ।
पर नारी परके सम्पति पर · लोभक नयन चलावे ॥१
मातु पितु नाहि आदर तासों · सज्जन गुरुहु न पावे ।
दुर्जन चोर जुआरी द्रोही · समता प्रीति बढ़ावे ॥२
राड़ी गारी करि बिवहारा · लूटहि परधन खावे ।
जान पड़े जब नरक निदाना · झूठे तब पछितावे ॥३

Copyright ANGEL

नवाँ चित्र ।

उस ख़स्तान की भीतरी दशा जो पाप से लड़ता और ईश्वर भक्ति में अंतलों अचल बना रहता है ।

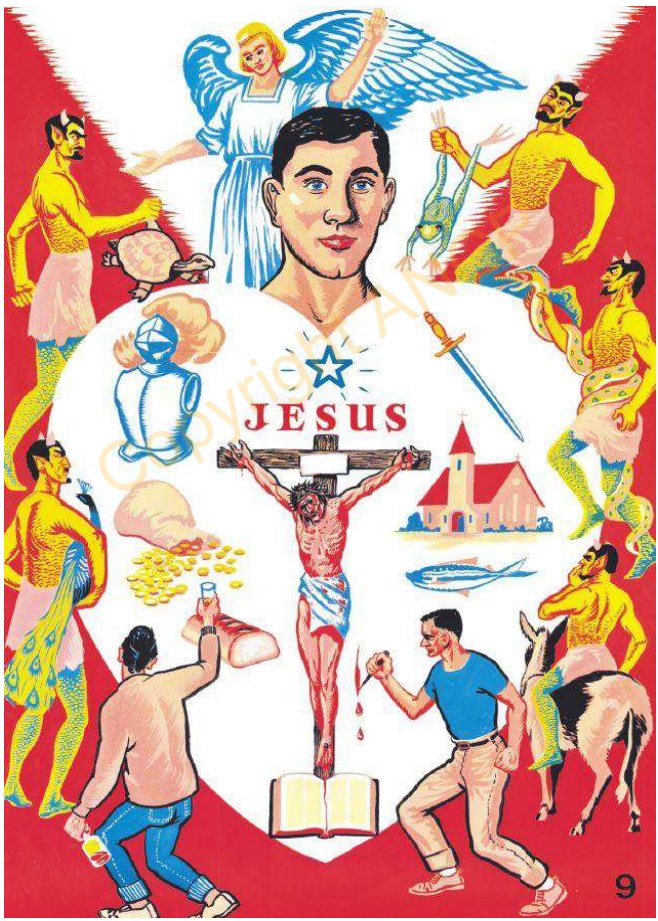

इस तसवीर में देखते हो कि ख्रिस्तान का मन चारों ओर बैरियों से कैसा घिरा हुआ है। शैतान और पाप नित हमारे घात में लगे रहते और अपने पुराने राजा को हमारे मन में फिर पाने की युक्ति बांधते हैं। नीचे दो मनुष्य खड़े हैं जो संसार की उपमा हैं। एक जन हाथ में पियाला लिये हुए शारीरिक भोग बिलास और सांसारिक सौभाग्य दिखाता और उसमें बुलाता है। दूसरा जन हाथ में कटार लिये धमकी, उपद्रव, निन्दा और दूसरी उपाधिसे मन को भलाई से रोकने और पापिष्ट चाल में डालने चाहता है।

मुक्ति के इन बैरियों से अर्थात शरीर, संसार और शैतान से ख्रिस्तान को इस जीवन में नित्य लड़ना पड़ता है परन्तु उसका मन हथियार बांधे हुए हैं, वे उस पर प्रबल नहीं हो सकते हैं। ऊपर उसके सिर पर ईश्वर का दूत अर्थात ईश्वर की कृपा झूम रही है जो उसको लड़ने के लिये नित उसकाती और दृढ़ रहने को चेताती है। वह पुकार के कहती है कि "जो कोई मल्लयुद्ध भी करे जो वह विधि के अनुसार मल्लयुद्ध न करे तो उसे मुकुट नहीं दिया जाता है" और "जो स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा"। मन में तेरा तेज से झलकता है अर्थात बिश्वास उस में सजीव है। और बिश्वास वह जय है जो जगत पर प्रबल होता है। (१ योहन ५, ४)। वह परमेश्वर के भरोसे से भरा है, इसलिये उसके

मनकी एक ओर लिखा है कि "मैं ख्रीष्ट में जो मुझे सामर्थ्य देता है सब कुछ कर सकता हूं"। और दूसरी ओर यह बचन लिखा है कि "यीशु ख्रीष्ट के प्रेम से मुझे कौन अलग करेगा ? क्या क्लेश वा संकट वा उपद्रव वा अकाल वा नंगाई वा जोखिम वा तलवार इन सब बातों में हम उसके द्वारा से जिसने हमें प्यार किया है जयवन्त से भी अधिक है" रोमी ८, ३५+३७। बिश्वास और प्रेम उसके मन में श्रेष्ट स्थान में बसते और उसको धर्म्म में स्थिर करते हैं।

मनके मध्य में रोटी की एक टिकली देख पड़ती है जिससे उसकी भूख, उस आत्मा के भोजन और जीवन की रोटी के लिये प्रगट होती है जो स्वर्ग पर-से आया है और जगत को जीवन देता है। (योहन ६, ३३)। इसी जीवती और जिलानेहारी रोटी को खाते खाते वह अपने बिश्वास और प्रेम को बेर बेर प्रभु की बियारी में साझी होके बल देता है। वह इसी भोजन में सब से बड़ी शक्ति और अनन्त जीवन पाता है जैसा यीशु ने भी कहा है "जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है सो मुझ में रहता है और मैं उस में रहता हूं, उसको अनन्त जीवन है"। योहन ६, ५६।

आगे मन में प्रभु यीशु ख्रीष्ट जो क्रश पर मारा गया और एक खुली हुई पोथी मंगल समाचार धर्म्मपुस्तक देख पड़ती है क्योंकि परमेश्वर के बचन धर्म्म पुस्तक को पढ़ना

औ विशेष करके यीशु के दुःख और मरण के समाचार पर ध्यान करना उसका प्रिय कार्य्य और उसके प्राण की सब से मोठो चराई है जिस पर वह बल पाता है कि संसार और पाप शरीर और शैतान की सब परीक्षाओं में दृढ़ और तैयार रहे। जो कोई यीशु को जो क्रूश पर मारा गया मन में नहीं रखता और थाम्भता है वह निश्चय जीते ही मृतक है और जो कोई परमेश्वर के बचन धर्म्म पुस्तक मंगल समाचार को सब से अधिक प्यार नहीं करता, नहीं पढ़ता और उस पर नहीं चलता, उसको सब बिद्या से अधिक नहीं चाहता और उसको अपने चालचलन का बिधान और आज्ञा नहीं बनाता, वह अपने प्राण में बड़ा रोगी और क्या जाने मर चुका और स्रापित हुआ है।

निदान हम मन में एक गिरजा घर, एक खुली हुई थैली, रोटी और मछली देखते है। गिरजा घर का अर्थ यह है कि वह प्रार्थना में मन लगाता और नित उसमें लीन रहता है, बिश्वासियों की संगति में और एकान्त छिपे कमरे में भी हां जहां कहीं वह आता और जाता है उसका मन परमेश्वर से बातें करता और उसके मेल में जीता और चलता फिरता है। वह उसकी समीपता से आनन्दित रहता, अपने को उसके हाथ में सौंपता, और उसके पास रहता है और प्रार्थना बिना कोई भक्ति में वा बिश्वास वा प्रेम में दृढ़ नहीं ठहर सकता है।

वह खुली हुई थैली इसकी दानशीलता और परोपकारिता दिखलाती है । वह लोभ का सामना करता जिस से वह अपने कंगाल भाइयों को मन से और भरसक अपने धन में से बांटता है जिस्तें अपना प्रेम प्रगट करे और अपना मन लौकिक बस्तुओं से अधिक अधिक छुड़ावे । वह जानता है कि वे प्राण जो बुरे बुरे काम जैसे कामातुरता, मतवालपन, और ऐसे दूसरे पापों को त्यागने से शैतान के बश से छुटे फिर धीरे धीरे शैतान के जाल में फँसते जब वे छिप के अपने को लालच और धन की प्रीति में फिर सौंपते और नाना प्रकार के बहाने और बात बनाके दूसरों की भलाई करना भूल जाते हैं। रोटी और मछली उसके व्रत नेम और संयम के चिन्ह हैं कि वह सब बातों में यथा योग्य, नाप और सीमा मानने की युक्ति करता है, जिस्तें वह असंयम भोगबिलास बहुत खाने और पीने और मतवालपन से शरीर के अभिलाष को न पालन करे आत्मा को न दबावे और अपने को भक्ति और धर्म्म के लिये अयोग्य न करे।

इन हथियारों को बांधे हुए सच्चा क्रिस्तान लड़ाई करता है। इन अस्त्रों को वह कभी नहीं उतारता और ऐसा प्रबल होके अपने सारे बैरियों को अर्थात् संसार शैतान और शरीर को जीतता है।

प्रार्थना

हे यीशु मेरे प्रियतम, जब तू मेरा है तो मैं स्वर्ग और पृथिवी को नहीं चाहता हूँ। तू मुझ में रह और मुझ को अपने में रहने दे तो मैं नित्य एक फलवान डार रहूंगा परन्तु तुझ बिना मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ। मेरे बिश्वास को नित्य २ और जिला दे कि वह तुझ को सर्वशक्तिमान समझे और मैं तुझ ही से जो सब कुछ कर सकता है, सब पर जयवन्त होऊं। तेरा प्रेम मुझ में अधिक होवे और मेरे सारे मन को तप्त करे कि मैं तेरे परम सुन्दरता और सर्वदा के महातम को सब से अधिक और अकेला ही प्यार करूं और तुझ को छोड़ कोई बस्तु सुन्दर वा तेजस्वी वा मनभावनी वा सुहावनी अपने प्रेम के योग्य न पाऊं। मुझे दृढ़ रहने की कृपा दान कर, यह केवल तेरी ओर से आती है। सहायता कर कि कोई बस्तु मुझे तेरे प्रेम से अलग न कर सके। तेरा क्रूश, तेरा मरण, तेरी मृत्यु का स्मरण भोज मेरे प्रेम और तुझ से लिप्त रहने का भोजन हो, वह मुझे तुझ से अपृथक मिलावे। मुझे उससे यह दान दे कि जिसकी प्रतिज्ञा तूने किई है अर्थात अनन्त जीवन, यहां भी बिश्वास के द्वारा से मेरे मन में बास कर। तेरा बल और जीवन भरा बचन मुझे प्रतिदिन की लड़ाई धीरज और सत्यता के लिये जगावे, प्रकाश करे, जिलावे साहस

और बल देवे। यह दे कि मेरा सारा मन मेरी सारी कामना, सारी चिन्ता और चाहना तुझे समर्पण होवे। कृपा कर कि मैं न केवल दो एक बुरी लालसा वा अभिलाषको मारू परन्तु मन को अर्थात लोभ, काम, डाह को भी, ईर्षा, अभिमान, क्रोध और मत्सर को और आलस्य और मतवालपन को भी मारू। यह दे कि मैं नित्य बिन्ती करूं जिससे मैं नित्य जय पाने के लिये नया बल तुझ से पाऊं और अन्त लों तेरा बिश्वस्त दास बना रह सकूं। आमीन।

भजन।

मन काहेको होहु निरारा - प्रभु यीशु मे राखो आशा ॥
जिन मर्त्तभवन में आये - तिन मुक्ति पदार्थ लाये।
तुम बातें करो प्रत्याशा - नव पेहो स्वर्ग निवासा ॥१
यीशु मृत्यु मुवन जयकारा - नित स्वर्गलोक अधिकारी।
आसी बातें करो तुम आशा - नव पैहो मन में दिलासा ॥२

— — ० ——

दसवां चित्र ।

ईश्वर भक्त का मृत्यु ।

जो मनुष्य बिश्वास में और ईश्वर भक्ति में अन्तलों दृढ़ रहता वह मरने की घड़ी में आनन्द से अपने मरण के बिछौने पर लेट जाता है, उसको न मृत्यु का न बिचार का डर है क्योंकि वह दोनों से छुड़ाया गया जैसा यीशु ने कहा है "जो मेरा बचन सुनके मेरे भेजनेहारे पर बिश्वास करता है उसको अनन्त जीवन है और दण्ड की आज्ञा उस पर नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होके जीवन में पहुँचा है"। योहन ५, २४।

यों धर्म्मी मन में निर्दोष होके बिश्राम से पड़ा हुआ है क्योंकि उसके सब पाप क्षमा हुए और परमेश्वर की कृपा उसके मन को सुख देती है। यीशु जो क्रूश पर मारा गया उसके मन में है और उसका सारा प्रेम और भरोसा उस पर लगा रहा जिसका उसने जन्म भर अपने हृदय में रखा, जिस पर उसने हर समय आशा रखी, जो अब भी मृत्यु में उसकी प्रत्याशा और शरणस्थान है। उसी के लिये वह जीता, उसीके लिये वह मरता है। उसकी हर्षित और सुखी मुख से उसके अन्तःकरण का कुशल. ईश्वरीय शांति और पवित्र आत्मा का अभिषेक जो उसके मन में बसता है चमकता है। आंख और मन स्वर्ग की ओर ताकता रहता है और उसकी सारी दृष्टि प्रगट करती है कि उसका अन्तर ध्यान किस पर लगा है अर्थात "मैं उठ जाने और ख्रीष्ट के संग रहने चाहता हूं"। ईश्वर का दूत

उसके प्राण की बाट जोहता है कि उसको परमेश्वर की गोद में पहुँचा देवे। निदान जब वह देह और मृत्यु के बन्धन से छुटा तो उसका प्राण उससे भेंट करने को उड़ जाता है जिस पर उसने यहां बिश्वास किया, जिस पर भरोसा रखा, जिसको उसने बिन देखे प्यार किया। अब वह उसके सन्मुख प्रगट होने पर है। ख्रीष्ट उससे मिलने को चला आता है और दोनों हाथ उसकी ओर पसार के कहता है "धन्य हे उत्तम और बिश्वास योग्य दास तू थोड़े में बिश्वास योग्य हुआ मैं तुझे बहुत पर प्रधान करूंगा, अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश कर"।

शैतान को निन्दा और अपमान के साथ भागना पड़ता है। मसीह को जैसा वह है वैसा आमने सामने देखना क्या ही आनन्द और क्याही हुलास होगा! और महिमा और परम गत में उसके समान होना यह कौन बर्णन कर सकता है?

यों धर्म्मी क्रिस्तान मरता है जो ख्रीष्ट पर बिश्वास करके पाप और संसार और शैतान से अन्तलों दृढ़ होके लड़ा। ईश्वर भक्ति की लड़ाई और कष्ट ऐसी सोहावन समाप्ति पाते हैं। ईश्वर हरएक को साहस देवे कि बिश्वास करने और लड़ने में थक न जावे पर सारी चेष्टा के साथ सकेत फाटक से प्रवेश करने और दौड़ को समाप्त करने के लिये

यत्न करे। उस पार विभव का मुकुट और अविनाशी निर्मल निष्कलंक अधिकार धरा हुआ है।

प्रार्थना।

हे प्रभु यीशु ख्रीष्ट जब मैं तुझे मन में रखता, जब तू मेरे पास है और मुझे शांति देता है तब मेरा मन अपनी मृत्यु के बिछौने पर क्याही सुखी होगा? तब कौन मुझे व्याकुल करेगा? कौन मुझे अपराधी ठहरावेगा? क्या मेरे पाप? इनसे तूने मुझे मोचन दिया, इनसे तूने मुझे धर्म्मी ठहराया, इनसे तूने मुझे अपने अनमोल लोहू से धोया और पवित्र किया। शैतान क्या करेगा? तूने उसको जीता और उसका बल उससे छीन लिया, वह मेरे बिरूद्ध कुछ नहीं कर सकता है क्योंकि तू मेरी ओर है, तू मेरे लिये मरा और जी भी उठा और ईश्वर की दहिनी ओर बैठके मेरे लिये बिन्ती करता है। सो मुझे मृत्यु में कोई वस्तु तुझ से अलग न कर सकेगी हे प्रिय यीशु यह दे कि मैं तेरे लिये जीऊं और तेरे लिये मरूं। कृपा कर कि मैं अब तुझ से बिश्वस्तता से मिला रहूँ और कभी तुझ से अलग न होऊ, कि मैं प्रतिदिन मरू और सब कुछ त्यागूं जो तुझ से सम्बन्ध नहीं रखता है, कि मैं अपना मन सब से भिन्न करूं जो मेरे साथ मृत्यु में नहीं रह सकता है। मुझ में अपने स्वर्गीय और सनातन राज की बड़ी अ भ-

लाषा जगा दे कि मेरा चलन अब भी स्वर्ग में हो जहां आगे से अधिकारी और घरवासी होके मेरा नाम लिखा गया है। यह तेरे पास रहने का महासुखमय आसरा मुझ से नित्य यत्न करवाता है कि मैं सुकर्म करने में कातर न होऊं, क्योंकि जो मेरा बल न घटे तो स्वर्ग में सर्बदा लों लबूंगा। इसके साथ हे प्रिय तारक तेरी आशा और तेरे पवित्र पुण्य प्रताप, तेरी दया और प्रेम का भरोसा मुझे कभी न छोड़े परन्तु मैं दृढ़ता से कष्ट और मरण और तेरे उत्तम और अपार पुण्य और धर्म्म पर आशा रखूं तू जो मेरे लिये मरा और अब मेरे लिये जीता है सनातन से सनातन लों। आमीन॥

—:०:—

भजन।

जो जन पाए स्वर्ग निवास - तिहि गति को बर्णै पारे॥
हाड़ मासु शोणित तन त्यागे - ब्याधि बिबिधके जो मारे।
तेजस रूपी निर्मल देहा - परमानन्द दायक धारे॥१
क्षुधा पिपासा कबहु न ताको - शीत उष्ण नहि तन ताड़े।
शोक बियोगक कबहु न जाने - होहि न कछु की अपहारे॥२
खल जनके लव लेश न जाने - नित सन्त समाज सुधारे।
यीशु गुण गान करे निरन्तर - तृप्त प्रभु रूप निहारे॥३
आंख न देख्यो कान न सुन्यो - मनहु न कछु आव बिचारे।
जान अधम लह सुख अस ताको - जाको प्रभु यीशु सवारे॥४

[समाप्त]

Copyright ANGP

A SPECIAL WORD FROM ANGP
UN MONDE SPÉCIAL DE L'ANGP
UMA PALAVRA ESPECIAL DA ANGP

This booklet "The Heart of Man" is available in over 538 languages and dialects spoken throughout the world (Africa, Asia, The Far East, South America, Europe, etc.) Our Heart Book is now also available on cell phones, tablets, etc from www.angp-hb.co.za or as an APP "Heart of Man" on Android phones.

Le livre du "Coeur de l'homme" peut etre obtenu en plus de 538 langues et dialectes parles dans le monde entier, a savoir: Afrique, Amerique, Asie, Extreme Orient, Europe. Notre Livre du Coeur est maintenant aussi disponible sur votre Telephone cellular, plaques, etc. de www.angp-hb.co.za ou comme une Application "Heart of Man" sur telephones Android.

Este livro "O Coracao do Homem" e obtfdo em mais de 538 linguas e dialectos falados em todo o mundo, a saber: (Africa, Asia, America do Sul, Extremo Oriente, Europa, etc). O nosso Livro O Coração do Homem tambem esta agora disponivel em telefone celular, tablets, etc. de www.angp-hb.co.za ou como um aplicativo "Heart of Man" nos telephones celulares Android.

Copyright ANGP

The 10 heart pictures contained in this booklet are also available in the form of large coloured picture charts (86 x 61cm) bound together in a set of 10 pictures. These "Heart Charts" can be obtained with European or African features and are particularly suitable to be used in conjunction with the Heart Book for class-teaching, open air evangelization etc. Kindly contact us to ascertain the latest subsidized price of this chart.

Les 10 images du coeur qui figurent dans ce livre peuvent etre obtenues en tableaux de couleur, format 86 x 61 cm, avec des physionomies europeennes ou africaines. Ils peuvent etre utilises en meme temps que le livre du coeur pour des classes bibliques, a

l'ecole du dimanche ou lors de reunions de plein air. Soyez aimable de nous contacter pour assurer les derniers prix en cours du tableau.

As 10 imagens do coracao, contidas neste livro podem ser obtidas num conjunto de 10 imagens em colorido no tamanho de (86 x 61 cm). Estes "Cartazes do Coracao podem ser obtfdos com caracterfsticas Europeias e Africanas e podem ser usados em conjuncao com o mesmo livro em classes de ensino biblico, evangelizacao ou ao ar livre. Agradeciamos que nos contacta- se para confirmacao do ultimo preco dos cartazes.

Kindly write to us if you are able to assist us with further translations of our free Gospel literature, informing us of the language into which you could translate this Gospel literature. Your assistance would be appreciated.

Copyright ANGF

If you have found salvation in Christ, or have been otherwise blessed through our Gospel literature, please let us know. We would like to thank God with you, and remember you further in our prayers.

Nous vous invitons a nous contacter pour faire des arrangements concernant de nouvelles traductions de notre litterature, nous informant de la langue dans laquelle vous pouvez traduire cette litterature evangelique. Votre aide sera beaucoup appreciee.

Si vous avez trouve le salut en Christ ou si vous avez ete beni par notre litterature, nous vous prions de nous le faire savoir. Nous aimerions remercier Dieu avec vous et prier pour vous.

Nos vos convidamos a nos contactar, afim de fazer qualquer arranjo concernente a novas traducoes de nossa literatura em outras lfnguas. Vossa assistencia sera muito apreciavel.

Se tem encontrado a salvacao em Cristo, ou se tem sido abencoado por intermedio da nossa literatura evangelica, faca o favor de nos

informar. Pois nos gostarfamos de agradecer a Deus juntamente convosco, e lembra-lo sempre em nossas oracoes.

For free Gospel literature, books and tracts in over 538 languages, write to:

Pour obtenir gratuitement de la litterature evangelique, des livres et des traites en plus de 538 langues, ecrivez a:

Para obter gratuftamente a literatura evangelica, livros e folhetos em mais de 538 lfnguas diferentes escreva para:

ALL NATIONS GOSPEL PUBLISHERS
P.O. Box 2191
PRETORIA
0001
R.S.A.

info@angp.co.za

Copyright ANGP

A Gospel Literature Mission financed by donations
Une Mission de litterature evangelique financee de dons
Missao de literatura Evanqelica financiada por donativos

(Reg. No. 1961/001798/08)